कम नहीं बोलेंगी ग़ज़लें

(अनागत हिन्दी ग़ज़ल संग्रह)

डॉ. अजय प्रसून

कम नहीं बोलेंगी ग़ज़लें

(अनागत हिन्दी ग़ज़ल संग्रह)

डॉ. अजय प्रसून

≈ प्रकाशक ≈

आकल्प प्रकाशन

लखनऊ

ISBN : 978-81-981298-0-2

कम नहीं बोलेंगी ग़ज़लें

(अनागत ग़ज़ल संग्रह)

रचनाकार : **डॉ. अजय प्रसून**
538/द्वितीय/318, योगीनगर, त्रिवेणीनगर तृतीय
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020 (उ.प्र.)
मो.: 9305107455

सर्वाधिकार © : रचनाकार के अधीन

संस्करण : प्रथम, 2024 ई.

मूल्य : ₹ 200.00

प्रकाशक : **आकल्प प्रकाशन**
615/128, प्रीती नगर, निकट अन्ना मार्केट
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020 (उ.प्र.)
मो.: 9839746476, sst301267@gmail.com
E-mail : aakalpprakashan@gmail.com

आवरण : गूगल से साभार

टाइपसेटिंग : सदाशिव तिवारी # 9839746476

मुद्रक : एन.ए. इन्टरप्राइजेज, 125ए, नया गांव ईस्ट,
लाटूश रोड, लखनऊ-226018 (उ.प्र.)

KAM NAHIN BOLENGI GHAZALEN (Anagat Ghazal Sangrah)
by Dr. Ajay Prasoon

जय शारदे माता

अपनी बात

अपना भारत देश आज विश्वगुरु बनने की स्थिति में है, वह सम्पूर्ण विश्व को एक नई दिशा दे सकता है और दे रहा है। आज सारा जगत भारत देश की ओर निहार रहा है कि वह समग्र जगत को एक नई दुनिया का सृजन करने के लक्ष्य के मार्ग को प्रशस्त करे। आज का युग साहित्य के चरमोत्कर्ष पर है, और साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने देश, समाज और पूरे विश्व के चिंतन की दिशा को बदल कर एक नये स्वरूप में ढाल सकते हैं।

साहित्य के अन्तर्गत हिन्दी ग़ज़ल विधा भी एक श्रेष्ठतम विधा के रूप में हमारे समक्ष है, जिसके द्वारा हम अपने चिंतन और नये दृष्टिकोण के द्वारा समाज के नव-निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर सकते हैं। बहुत समय से मेरा कोई हिन्दी ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित नहीं हो सका है, अतः ग़ज़ल संग्रह के रूप में मेरा हिन्दी अनागत ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित रूप में आपके समक्ष आने को प्रस्तुत है। मेरा यह अनागत हिन्दी ग़ज़ल संग्रह जिसका शीर्षक 'कम नहीं बोलेंगी ग़ज़लें' है, यह अनागत हिन्दी ग़ज़लें मेरे अपने निजी चिंतन के द्वारा सृजित की गई हैं। समय-समय पर जो विचार मन-मस्तिष्क में उपजे और उन्होंने ग़ज़लों का रूप ग्रहण किया और एक साकार रूप में आपके समक्ष आई हैं। वे कितनी सार्थक हैं और समाज एवं देश के लिये कितनी लाभप्रद हैं, इसका अनुभव मुझे तभी मिलेगा जब आप सुबुद्ध पाठकों के विचार मुझे प्राप्त होंगे।

मैंने सन् सत्तर-अस्सी के दशक में हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत अनागत कविता आन्दोलन का विचार समाज एवं साहित्य के सम्मुख प्रस्तुत किया था जिसका उद्‌देश्य ''कठिन वर्तमान जीते हुए स्वर्णिम भविष्य की कल्पना को साकार करना था'' अतः इसी उद्‌देश्य की पूर्ति

हेतु यह अनागत हिन्दी ग़ज़ल संग्रह ''कम नहीं बोलेंगी ग़ज़लें'' आपके समक्ष है और इसीलिये इसे अनागत हिन्दी ग़ज़ल भी कहा है।

हिन्दी ग़ज़ल के लिये मेरा यह छोटा-सा प्रयास है। माँ सरस्वती मेरे इस प्रयास को अपना आशीष प्रदान करें, यही माँ से करबद्ध प्रार्थना है और साथ ही आप सभी पाठकों से भी निवेदन है कि इसे अवलोकित कर अपने विचार प्रदान कर मुझे उत्साहित भी करें ताकि मेरा श्रम सार्थक हो सके।

जय अनागत, जय माँ सरस्वती।

आपका

डॉ. अजय प्रसून

अध्यक्ष/संस्थापक, अखिल भारतीय अनागत
साहित्य संस्थान, माँ वैभवलक्ष्मी होम्यो क्लीनिक,
538/द्वितीय/318, योगीनगर, त्रिवेणी नगर तृतीय,
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020

दिनांक 16.12.2024

मो.: 9305107455

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	ग़ज़ल		पृ.सं.
1	कम नहीं बोलेगी ग़ज़लें	....	10
2	तुम नहीं हो तो सच हम नहीं	....	11
3	जीना न हो आसान तो कोई ग़ज़ल कहो	....	12
4	कब नहीं बोले नयन है	....	13
5	दो घड़ी के लिये ही न आया करो	....	14
6	न देखें तुम्हें तो कहाँ चैन आये	....	15
7	वे घाटियों में ज़िंदगी की लय सुनायेंगी	....	16
8	आयेंगे जलते प्रात नाउम्मीद मत होना	....	17
9	कुछ भी न समझ आये कि अब क्या करेंगे हम	....	18
10	भोले मन पर चोट करे वह शायक नहीं बने	....	19
11	जो भी पीछे छूटा वापस ग़ज़लें लायेंगी	....	20
12	न तो मुँह मोड़कर भागे न तो रण छोड़कर भागे	....	21
13	अभी हम मौन बैठे हैं उछालेंगे कभी पर्वत	....	22
14	प्यार की थपकी से जाने क्या समझा देती माँ	....	23
15	दुनिया को प्रकाशमय करके नित्य उगे सविता	....	24
16	हम रहे जीवन में हर पल टिमटिमाते से दिये	....	25
17	तुम भले समझो मगर शोषित ग़ज़ल तो है नहीं	....	26
18	सूर्य या चन्द्र इस हथेली में	....	27
19	झरनों जैसी खुली लड़कियाँ	....	28
20	शरीरों में साँसें अक्षय लाने वाले	....	29
21	बीता कितना समय मगर तुम नहीं मिले	....	30
22	सलामी ठोंकना जीवन में हमको आ नहीं पाया	....	31
23	चिंतनों के प्रमुख चरण में हम	....	32
24	कितना भी उजाला हो लेकिन मैला हर दर्पण कर दें	....	33
25	हवायें आने वाले दौर का संकेत देती हैं	....	34

क्र.सं.	ग़ज़ल		पृ.सं.
26	तुम आये तुम चले गये क्या ठीक है ये	....	35
27	गीत गा रहे हैं जीवन के नहीं पराजय के	....	36
28	आसमानों में भर उड़ान कभी	....	37
29	चेहरा समाज का हुआ नृशंस देखना	....	38
30	हृदय के राजकुँवरों की सवारी भी निकल पड़ती	....	39
31	दर्पण हमें दिखला रहा चेहरा जो आज का	....	40
32	यही वास्तविकता नहीं वास्तविकता	....	41
33	हम लोगों के मन में होंगे	....	42
34	कभी मन कहे कि हम कुछ कहें	....	43
35	एक सार्थक प्रयास करना है	....	44
36	तू तेल देख तेलवाली धार को भी देख	....	45
37	जंगलों में खड़ा मचान नहीं	....	46
38	अनागत पर विजय पायें हमारे प्यार की किरणें	....	47
39	तेरे होंठों के पास होती है	....	48
40	लक्ष्य बेशक हुजूर मिलता है	....	49
41	एक तीखी कटार है यारो	....	50
42	कभी थे अमृत सरीखे अब हो गये जहर से	....	51
43	देखी न हो तो देख लो करीब से नदी	....	52
44	हाथों में हाथ थे शिखर थे शांत जलप्रपात	....	53
45	पंछी थे दोनों मुक्त और क्या लगाव था	....	54
46	लानतें भेजिये ज़माने पर	....	55
47	इस धरती पर किस्मत ने क्या खेल दिखा डाले हैं	....	56
48	हो गया जग में जाहिर झुका	....	57
49	शब्द जीवन्त भी तो होते हैं	....	58
50	जब अपनों से ही उपेक्षित होना पड़ता है	....	59
51	जीवन आठोंयाम पढ़ा क्या मैंने ही	....	60
52	चेहरों पे तिमिर धारे सपन जलने लगे हैं	....	61
53	अभिशापों में अब न जियेंगे	....	62

क्र.सं.	ग़ज़ल		पृ.सं.
54	भूलो सभी व्यथायें नया साल आ गया	....	63
55	मौसम के रूमाल सामने आते हैं	....	64
56	तड़पे जल में मीन मछेरा क्या कर ले	....	65
57	जिस आँगन में कभी सुनी थी अपनेपन की	....	66
58	लावारिस शव जैसे बीच नदी के कोई बहता है	....	67
59	तुम आदमी जरूर हो इंसान तो नहीं	....	68
60	है गहरी झील झील में उतर रहे हो क्यों	....	69
61	इस समय जो लोग अपने सामने हैं	....	70
62	क्यों भूमि से आकाश तक जाते बिखर नहीं	....	71
63	मन तो शत-शत सुमन पिरोता है	....	72
64	भरी बारिश में हमें आग को बचाना है	....	73
65	वक़्त का रुख जानलेवा है	....	74
66	गगनवेधी उड़ानों में किये शामिल गये हम भी	....	75
67	हाथ कोरे मले गये आखिर	....	76
68	जो सारस्वत रही कविता	....	77
69	आँधी हो या तूफान हो या चक्रवात हो	....	78
70	साँसें करें फरेब तो ये काया क्या करे	....	79
71	स्वप्न टूटा तो अश्रु भर आये	....	80
72	सोच के जंगलों के वासी है	....	81
73	हम तो बस सोचकर ही रह जाते	....	82
74	किसी दर्द की झील सरीखी ज़िंदगी	....	83
75	आँख में आँसू भी आयें तो भला पोछेगा कौन	....	84
76	काट करके गई रास्ता आँधियाँ हमने सोचा न था	....	85
77	बिगड़े हुए सपूत को लायक बना दिया	....	86
78	चमका दे भाग्य को वो सितारा नहीं बना	....	87
79	जीवन वरदान मानिये	....	88
80	दर्द के सरोवरों का नीर पी गये	....	89
81	इसे हाथ लेकर है बिगड़ा जमाना	....	90
82	कितने रात्रि दिवस खोये हैं	....	91

क्र.सं.	ग़ज़ल		पृ.सं.
83	सरहदों पर युद्ध के आसार दिखते हैं	....	92
84	जिंदगानी का सार सारा है	....	93
85	जैसे धरती पे नभ के सितारे चले	....	94
86	जब भी जल प्रलय होगी सोचो क्या गजब होगा	....	95
87	आँधियाँ तुमने उड़ाई कर रहा मंथन जगत	....	96
88	बीते जीवन की सब बातें भूल गये	....	97
89	हर दिन कोई हवा विरोधी नश्तर क्षण क्षण दे	....	98
90	मेरी अपनी प्यास तनिक सी...	....	99
91	मंजिलों की दूरियों को आँख में भर लें	....	100
92	इसे तुम सच ही मानो समय से परे हुए हैं	....	101
93	मन बहुत यार पर न जाना है	....	102
94	उदास आँखों के सपनों को पाल कर रखना	....	103
95	बहती हुई नदी का कोई विकल्प सोचो	....	104
96	मन है कि जैसे तेरी ही ओर उड़ा जाता	....	105
97	कलाकार तुम बड़े तुम्हारी जय जय जय	....	106
98	भोर की पहली किरन छूकर गई	....	107
99	धरा के देवता गोलू गगन के चंद्रमा गोलू	....	108
100	मेरी आँखों में तेरे सपने हैं	....	109
101	धरती पर सैलाब नाचते ऐसे दृश्य दिखे	....	110
102	करके बड़े बवाल नाचता	....	111
103	गीतकार तुम प्रखर ये सारा जग जाने	....	112
104	गुमसुम गुमसुम हुए भला क्यों प्रभु जाने	....	113
105	एक शव बन के रह जायेंगे	....	114
106	बड़ी जर्जर पुरानी है नाव क्या करें	....	115
107	हमारी भावनाओं पर न कर तू वार बंजारे	....	116
108	लेखनी धारदार करते चलो	....	117
109	हमारी त्रसदी है मन कभी जीता न हारा है	....	118
110	बड़ा ज्वरग्रस्त पीड़ित सा अनागत काल दिखता है	....	119
111	मेरा चिंतन महाचिंतन अमर फल देने वाला है	....	120

देना वरदान शारदे।
विद्या का दान शारदे।

इस अजाने विश्व में हमें,
देना पहचान शारदे।

वीणावादिनी तुम्हीं तो हो,
धरती का मान शारदे।

देवी संगीत की तुम्हीं,
कविता की शान शारदे।

राहें पथभ्रष्ट व्यक्ति की,
करना आसान शारदे।

कर्मों से हम विरत हुए,
क्यों हो अंजान शारदे।

भक्ति आपकी करे 'प्रसून',
कर सुधा का पान शारदे।

1

ग़म नहीं बोलेंगी ग़ज़लें।
कम नहीं, बोलेंगी ग़ज़लें।

मृत्यु का भय, भय नहीं है,
यम नहीं, बोलेंगी ग़ज़लें।

ये चबा लेंगी अँधेरा,
तम नहीं, बोलेंगी ग़ज़लें।

हमको सुनना कष्टदायी,
हम नहीं, बोलेंगी ग़ज़लें।

जो कहा वह सत्य है सब,
भ्रम नहीं, बोलेंगी ग़ज़लें।

कोई अपने मन की कर ले,
दम नहीं, बोलेंगी ग़ज़लें।

देख सब कुछ आँख कोई,
नम नहीं, बोलेंगी ग़ज़लें।

2

तुम नहीं हो तो सच हम नहीं।
दर्द सौ से अधिक, कम नहीं।

जाने क्या इसका परिणाम हो,
ज़िंदगी है विषम, सम नहीं।

जब से तुम मन के वासी हुए,
है उजाला बड़ा तम नहीं।

लक्ष्य तेरा मिलन प्रिय से हो,
मिलना है तो कहीं, थम नहीं।

रम वहीं तू रमा है जहाँ,
हर कहीं इस तरह रम नहीं।

आँखें तो रोये जायें 'प्रसून',
पलकें सूखी हुईं, नम नहीं।

3

जीना न हो आसान तो कोई ग़ज़ल कहो।
जब मन हो परेशान तो कोई ग़ज़ल कहो।

लहरों में पाँव बाँध के नौकायें जो भागे,
खतरे में पड़े जान तो कोई ग़ज़ल कहो।

तुम सा न कोई था न कोई आगे भी होगा,
हो जब भी ये अनुमान तो कोई ग़ज़ल कहो।

जब लेखनी न साथ दे शब्दों की भीड़ में,
रुकने लगे जुबान तो कोई ग़ज़ल कहो।

स्थिर न रहे बुद्धि, आत्मा न हो वश में,
जब टूट जाये ध्यान तो कोई ग़ज़ल कहो।

जब हीन भावनायें जन्म लें दिमाग में,
जब टूटे स्वाभिमान तो कोई ग़ज़ल कहो।

कैसे पुराने दौर को फिर लाओगे 'प्रसून',
जो खो गई पहचान तो कोई ग़ज़ल कहो।

4

कब नहीं बोले नयन है।
रब नहीं बोले नयन हैं।

कुछ न कुछ तो शेष होगा,
सब नहीं बोले नयन हैं।

कुछ नहीं वीभत्स होता,
तब नहीं बोले नयन हैं।

बोलना था जिनको चुप हैं,
लब नहीं बोलें नयन हैं।

बोलते आये हमेशा,
अब नहीं बोले नयन हैं।

कोई घटनाक्रम बता दो,
जब नहीं बोले नयन हैं।

5

दो घड़ी के लिये ही न आया करो।
देर तक मेरे मन को लुभाया करो।

एक ही गीत काफी नहीं है शुभे,
प्यार के गीत पल-पल सुनाया करो।

तुम तो नीले गगन का खिला चाँद हो,
चाँदनी की तरह झिलमिलाया करो।

नींद में स्वप्न में नैन की झील में,
सूर्य प्रतिबिंब जैसी समाया करो।

हम तो मुख से कभी कुछ न कह पायेंगे,
तुम ही करके पहल मन पे छाया करो।

है अकेली अकेली सी जीवन-नदी,
छू लो एक बार ही धन्य काया करो।

तुम सरल हो सरलतम हृदय स्वामिनी,
प्रीति की जान्हवी सी बहाया करो।

6

न देखें तुम्हें तो कहाँ चैन आये।
हृदय में तुम्हीं बस तुम्हीं तो समाये।

ये पलकें नयन-कोर छूने न पाईं,
गई रात के जो भी पल हैं बिताये।

ये सच है इसे झूठ हरगिज न जानो,
तुम्हीं देह-प्राणों की लौ हो जलाये।

तुम्हारे लिये तुम नहीं जानते हो,
दुखों के अनेकों शिखर हम उठाये।

जहाँ देखते हैं जिधर देखते हैं,
तुम्हें देखते हैं न तुम जान पाये।

ये उलझन ये बेचैनियाँ कह रही हैं,
तुम्हारे लिये हो गये सब पराये।

सतत साधना का ये क्रम अनवरत है,
'प्रसून' इसका परिणाम क्या जान पाये?

7

वे घाटियों में ज़िंदगी की लय सुनायेंगी।
ग़ज़लें कभी गुफाओं में रहने न पायेंगी।

इनमें जो बात है वो किसी और में नहीं,
तुम देखते रहना ये नई क्रान्ति लायेंगी।

तुम जोश में खोना न कभी होश देखना,
ये वो हैं जो मंजिल से तुम्हें खुद मिलायेंगी।

ये जिम्मेदारियों से कभी मुँह न मोड़ेंगी,
कंधों पे सारा बोझ अपने खुद उठायेंगी।

क्या हो रहा है आज क्या कल होने वाला है,
ये आने वाली पीढ़ियों को सच बतायेंगी।

वातावरण में आज घुटन जो भी लग रही,
दे करके चेतना की हवा खिलखिलायेंगी।

हरगिज न भटकना कभी पुरुषार्थ से 'प्रसून',
बनकर प्रसून की महक हर ओर जायेंगी।

8

आयेंगे जलते प्रात नाउम्मीद मत होना।
कैसे भी हो हालात नाउम्मीद मत होना।

कभी प्यास भी जो लगे प्रखर परवाह मत करना,
दुख देंगे जल प्रपात नाउम्मीद मत होना।

अवसाद भरे पल भले तुम्हें तोड़कर रख दे,
कर लेना आत्मसात नाउम्मीद मत होना।

अपने सभी मिल करके तिरस्कार ही कर दें,
कितने मिलें आघात नाउम्मीद मत होना।

हर स्वप्न जिसे पाल के रक्खे हुए मन में,
हो जायें भस्मसात नाउम्मीद मत होना।

वे फिर खिलेंगे खिल के महक देंगे फिर 'प्रसून',
मुरझायें जो जलजात नाउम्मीद मत होना।

9

कुछ भी न समझ आये कि अब क्या करेंगे हम।
अपने से अपने आप की चर्चा करेंगे हम।

नस-नस में भयाक्रान्त कोई पल समा गया,
कब तक कहो इस भ्रम को यूँ ढोया करेंगे हम।

पग तो कभी थे पर्वतों पे आज जहाँ हैं,
नीचे न भूमि अब कहाँ रक्खा करेंगे हम।

सपनों को देखना कभी का बंद कर दिया,
अब देखने को शेष क्या देखा करेंगे हम।

हर आती जाती साँस फँसी दूसरे से है,
कैसे इन्हें सुलझायें ये सोचा करेंगे हम।

ये जानलेवा अब ये एकान्त में घुटन,
अब कैसे स्वयं से इसे साझा करेंगे हम।

ये कैसा चक्रव्यूह जिसमें फँस गये 'प्रसून',
हर रोज जहाँ धँस के फिर निकला करेंगे हम।

10

भोले मन पर चोट करे वह शायक नहीं बने।
किये पराक्रम बहुत किन्तु हम नायक नहीं बने।

साठ वर्ष के वृद्ध हुए समृद्ध हुए लेकिन,
सत्य किसी के लिये कभी दुखदायक नहीं बने।

गा सकते थे मधुर कण्ठ था फिर भी नहीं गाया,
पढ़ते रहे कवितायें अपनी गायक नहीं बने।

अपनों का हित कर पाते इच्छा थी मानस की,
अपनों का हित करें कभी इस लायक नहीं बने।

अपनी भी कुछ कमजोरी कुछ जिम्मेदारी थी,
इसीलिये जीवन में सुविधायक नहीं बने।

बड़े-बड़े सम्मुख थे केवल शक्ति राम की थी,
कृपा उन्हीं की रही कभी परिचायक नहीं बने।

11

जो भी पीछे छूटा वापस ग़ज़लें लायेंगी।
फिर से नये तीर और तरकश ग़ज़लें लायेंगी।

जिसको देखे हुआ जमाना बीता साँसें तरसी हैं,
उसे नयन के सम्मुख बरबस ग़ज़लें लायेंगी।

शौर्य–प्रतिष्ठा–स्वाभिमान की जोड़ेंगी कड़ियाँ,
नाम–प्रसिद्धि–पराक्रम और यश ग़ज़लें लायेंगी।

धारायें जो मोड़ी तुमने वे सीधे बह निकली हैं,
फिर से हुईं न जो टस से मस ग़ज़लें लायेंगी।

हुईं चेतना शून्य शिरायें लहू प्रवाहित नहीं हुआ,
पुनः प्रवाहित होगा नस–नस ग़ज़लें लायेंगी।

दृष्टि समक्ष नवागत राहें कभी अनागत लायेगा,
फिर से नई सोच नव मानस ग़ज़लें लायेंगी।

12

न तो मुँह मोड़कर भागे न तो रण छोड़कर भागे।
हृदय ही पाया कुछ ऐसा सभी को जोड़कर भागे।

न हमको था कभी स्वीकार बंधन कोई जीवन में,
बड़े बिंदास लहजे में सभी को तोड़कर भागे।

किया है सामना हमने अनेकों झंझावातों का,
सदा आगे ही बढ़ करके सभी से होड़ कर भागे।

मरुस्थल में सलिल बनकर अनल बनकर अनिल बनकर,
बने झरना बने नदिया चट्टानें फोड़कर भागे।

अनागत के पथिक हैं हम भविष्यत लक्ष्य है अपना,
कभी मौका पड़ा ऐसा समय को मोड़कर भागे।

कुछ अपना था स्वभाव ऐसा न आया रेंगना हमको,
जहाँ पैदल गुजरना था वहाँ से दौड़कर भागे।

नियति अपनी हमेशा थी अकेले पार पथ करना,
यही देखा 'प्रसून' हमको चले सब छोड़कर आगे।

13

अभी हम मौन बैठे हैं उछालेंगे कभी पर्वत।
हमारे कर्म फलदायक सम्हालेंगे कभी पर्वत।

अभी ऊँचाइयों पर है जिन्हें हम दूर से देखे,
बनाकर चादरें इनको बिछा लेंगे कभी पर्वत।

करेंगे ऐसा कुछ तो हम हमें हैरत से देखेंगे,
हमारा नाम ले लेकर कमा लेंगे कभी पर्वत।

अभी कमजोर दिखते हैं बड़े मायूस लगते हैं,
सभी देखेंगे काँधों पर उठा लेंगे कभी पर्वत।

अभी तो फूल-पत्ते-झरने और नदियाँ भी इनकी हैं,
ये तय है अपने साँचों में भी ढालेंगे कभी पर्वत।

हमारी आत्मा के सामने इनकी चलेगी क्या,
अभी ये पाले हमको हम भी पालेंगे कभी पर्वत।

अभी नाकामयाबी में गुजरता जा रहा जीवन,
समय आयेगा हम भी देखे-भालेंगे कभी पर्वत।

14

प्यार की थपकी से जाने क्या समझा देती माँ।
रोता बच्चा सो जाता लोरी गा देती माँ।

जब भी हमारी साँसों में चिंता की बर्फ जमे,
सूरज की गुनगुनी धूप से पिघला देती माँ।

कितना उसे उपेक्षित रक्खो दूर भले कर दो,
बच्चों पर खुशियों का सावन बरसा देती माँ।

माता है ममता का मंदिर दर्शन नित्य करो,
शुद्ध रूप से वात्सल्य की वसुधा देती माँ।

एक तनिक सा काँटा भी यदि चुभ जाये पग में,
चुपके से दो बूँद अश्रु के ढुलका देती माँ।

भले ही पचपन के हो जायें हम तुम या कोई,
फेरे सिर पर हाथ तो बचपन लौटा देती माँ।

बनी 'प्रसून' रहे यह आस्था जीवन के मग में,
निज ममत्व वाला तुलसी का बिरवा देती माँ।

15

दुनिया को प्रकाशमय करके नित्य उगे सविता।
बेटे के भविष्य को जगमग करता रहे पिता।

रूप तुम्हारा ही परमेश्वर-सा इतना तय है,
मिला तुम्हारा रूप पिता को जग के परमपिता।

स्वर्गिक आभा मिल जायेगी बात याद रखना,
पिता के साये में पगले बस तू क्षण एक बिता।

पिता पुत्र की इच्छाओं को पल-पल पूर्ण करे,
जैसे प्यास बुझाती खुद प्यासी रहकर सरिता।

एक पिता की भावनायें यदि आहत हो जायें,
मनः भावनाओं की भीषण जलने लगे चिता।

हर बेटे का धर्म यही सम्मान पिता का हो,
नई पीढ़ियों को समझाने यही चली कविता।

तुम पर यदि 'प्रसून' आ जाये विपदा पिता हरे,
हार न पाये पिता कभी भी ईश्वर उसे जिता।

16

हम रहे जीवन में हर पल टिमटिमाते से दिये।
मन में कोलाहल समेटे और होठों को सिये।

योग्यता हममें नहीं थी जा के पढ़ते गीत–ग़ज़लें,
हम बने हरगिज नहीं थे राजभवनों के लिये।

हम परीक्षित के नहीं जनमेजयों के पक्षधर,
जन्म तो हमने लिया था सर्प दहनों के लिये।

हम कभी प्रस्तर कभी वसुधा बने आधार को,
शृंग से गिरने को आतुर तीव्र झरनों के लिये।

हम प्रतीक्षारत रहे किसके लिये जाना नहीं,
जाने कब से जागते सोते से नयनों के लिये।

प्यार का मरहम लिये भटका किये दर–दर 'प्रसून',
तीर में घायल हुए सुकुमार हिरणों के लिये।

17

तुम भले समझो मगर शोषित ग़ज़ल तो है नहीं।
यह किसी भी क्रान्ति की घोषित ग़ज़ल तो है नहीं।

यह नदी की आत्मा को चीर देती है,
किन्तु सच है यह कि आक्रोशित ग़ज़ल तो है नहीं।

यह पहाड़ों की प्रलय को झेलकर आई,
यह किसी सरकार से पोषित ग़ज़ल तो है नहीं।

यह ग़ज़ल ही है युगों की आँख का पानी,
किन्तु भूलो मत कि आंदोलित ग़ज़ल तो है नहीं।

यह दिशाओं की दिशा को मोड़ देती है,
यह किसी भूचाल से रोपित ग़ज़ल तो है नहीं।

18

सूर्य या चन्द्र इस हथेली में।
कुछ तो है बंद इस हथेली में।

तुलसी के या कि दास केशव के,
किसके हैं छंद इस हथेली में।

मुक्त झरने इसी में बहते हैं,
धूप स्वच्छन्द इस हथेली में।

भाव से मन विभोर हो जाता,
दुःख निष्पंद इस हथेली में।

छूने से आत्मा मुखर होती,
कितना आनंद इस हथेली में।

डूबना है 'प्रसून' तुमको भी,
डूबे घनानंद इस हथेली में।

19

झरनों जैसी खुली लड़कियाँ।
होती हैं चुलबुली लड़कियाँ।

खुलती और बन्द भी होतीं,
मुखर भाग्य अंजुली लड़कियाँ।

किसी दुल्हन के गले सजी जो,
लगें रजत हँसुली लड़कियाँ।

देखो तो लगता जाने क्यों,
ओस कणों से धुली लड़कियाँ।

गर्म दूध सी उबल रहीं जो,
दिखती हैं काबुली लड़कियाँ।

नवयौवन का बोझ उठातीं,
होती हैं क्या कुली लड़कियाँ।

भरें उड़ान गगन में, जल में,
शक्कर जैसी घुली लड़कियाँ।

रहीं जिंदगी में 'प्रसून' की,
सोने चाँदी तुली लड़कियाँ।

20

शरीरों में साँसें अक्षय लाने वाले।
कहाँ हो गये गुम प्रलय जाने वाले।

समय का चला चक्र ऐसा न पूछो,
विवश हो चले शुभ समय लाने वाले।

अजाने डरों से घिरे प्राण मन भी,
हैं भयभीत सारे अभय लाने वाले।

जलाती गई अग्नि स्वर्णिम इरादे,
कहीं सो गये व्योम लय जाने वाले।

उबलते हुए तीक्ष्ण तम विष सरीखे,
मिले लोग ऐसे मलय लाने वाले।

'प्रसून' और ही होंगे लौटेंगे अब जो,
कहीं नींद में हैं अजय लाने वाले।

21

बीता कितना समय मगर तुम नहीं मिले।
भूले सारे विषय मगर तुम नहीं मिले।

सपनों के परखचे उड़ाती जाती है,
टीसें देती मलय मगर तुम नहीं मिले।

वृद्धावस्था की देहरी को छूकर भी,
रोया पल-पल हृदय मगर तुम नहीं मिले।

उथल-पुथल करके चाहों की बस्ती में,
आकर लौटी प्रलय मगर तुम नहीं मिले।

सारे देवी-देवताओं के नाम रटे,
प्रभु से भी की विनय मगर तुम नहीं मिले।

देह-देह के बीच दूरियाँ बढ़ीं तभी,
भुला चुका मन प्रणय मगर तुम नहीं मिले।

मृत हो गई 'प्रसून' महक जीवन भर की,
टूटा कितना अजय मगर तुम नहीं मिले।

22

सलामी ठोंकना जीवन में हमको आ नहीं पाया।
किसी सत्ता की देहरी पर कोई ले जा नहीं पाया।

कहीं सिर टेक देना और लाभान्वित भी हो जाना,
कभी ऐसा कोई गुण अपने हिस्से आ नहीं पाया।

मिटाना चाहता था जो विषमता की कठिन परतें,
सरल था मन कठिनतम गुत्थियाँ सुलझा नहीं पाया।

तुम्हारी कामनाओं के जहाँ बादल बरसते हैं,
कोई उन बादलों की बूँद भी एक पा नहीं पाया।

तुम्हारी बातें शहदीली गले अपने नहीं उतरीं,
अधर पर था जो कड़ुवा सच कोई झुठला नहीं पाया।

23

चिंतनों के प्रमुख चरण में हम।
थे नहीं भ्रम के आवरण में हम।

हम भगीरथ नहीं हुए तो क्या,
व्योम गंगा के अवतरण में हम।

तुम कभी सोच भी नहीं सकते,
वेदों-श्लोकों के उद्धरण में हम।

शक्ति देता परम पिता सबको,
माना हैं ओम की शरण में हम।

हिम शिखर थे पिघल गये पल में,
वायु की भाँति संचरण में हम।

अनवरत चल रहा दिमागों में,
ज़िंदगी के अनाम रण में हम।

क्या बतायें 'प्रसून' जीवन में,
कितनी सदियों से जागरण में हम।

24

कितना भी उजला हो लेकिन मैला हर दर्पण कर दें।
ऐसे निर्मम लोग चहकते मन को निर्जन वन कर दें।

स्वाभिमान से नहीं व्यक्ति को गंदा करें बलाओं से,
जो उन्नत स्फूर्तिवान हैं उनका कुंद जेहन कर दें।

कालकूट कर दें ये जल को अपनी मोहक वाणी से,
ये चाहें तो छिन्न-भिन्न इस धरती का कण-कण कर दें।

भीख माँगते आगे इनके दया-मोह-माया-ममता,
निर्मल बूँदें नहीं अग्नि बरसायें वो सावन कर दें।

कठिनाई से चलने वाले निर्बल और असहायों के,
सपनों को मृतप्राय बनाकर उनका कफन दफन कर दें।

कुटिल दृष्टि से तहस-नहस ये कर दें अंतरात्मा तक,
कुछ भी देख न पाये ऐसा मानव का वो मन कर दें।

25

हवायें आने वाले दौर का संकेत देती हैं।
जो उड़ना चाहते खुलकर गला ही रेत देती हैं।

वे अपने मन की करती हैं वो अपनी चाल चलती हैं,
किसी भी सिरफिरे का सिर किसी को भेंट देती हैं।

नहीं अब खोजना पड़ता शिकारी को शिकार अपना,
बड़ी मासूमियत के साथ ये आखेट देती हैं।

न दिखता है किसी को कुछ भले ही वस्तु हो सम्मुख,
बड़ी चालाकियों से भर नयन में रेत देती हैं।

यही आगाह करती हैं सँभल करके चलो हर पल,
नहीं चेते हैं जो अब तक उन्हें भी चेत देती हैं।

'प्रसून' ऐसा भी हो सकता मनुज पशुतुल्य हो जाये,
मनुजता को जतन से कर ये मटियामेट देती हैं।

26

तुम आये तुम चले गये क्या ठीक है ये!
हाथों को हम मले गये क्या ठीक है ये!

मोहक छवि दिखलाकर तुमने छुआ आत्मा को,
यह भी सच हम छले गये क्या ठीक है ये!

देह जले ज्यों चंदन वन में आग लगी हो,
तुम तो बनकर भले गये क्या ठीक है ये!

अग्नि जलाकर भावनाओं की सच मानो,
मनः स्वप्न हम तले गये क्या ठीक है ये!

तुम तो अपना मार्ग खोजकर निकल गये,
अपने पथ जलजले गये क्या ठीक है ये!

बाँध 'प्रसून' मोह जालों में ढलती वय को,
उस पर संध्या ढले गये क्या ठीक है ये!

27

गीत गा रहे हैं जीवन के नहीं पराजय के।
हँसते-हँसते चले जा रहे परचम लिये मधुर लय के।

आत्मसात कर लिया दर्द को किंचित याद नहीं दुख की,
नहीं सहारा लिया किसी का हैं मोहताज न परिचय के।

माया-मोह तोड़ ही डाले अकस्मात हमने पल में,
अब न कहीं जल महल शेष हैं मन में भ्रम के संशय के।

कितने सारे ताजमहल रच डाले चाह सृजन की थी,
किया उपेक्षित ऐश्वर्य को प्याले तोड़ दिये मय के।

हमसे जो हो सका किया सब सबके ही सब कार्य किये,
प्रभु की आज्ञा जान सदा ही अक्षत बिखेरे अक्षय के।

चाहे दोषी ठहरा डालो चाहे घड़ी-घड़ी कोसो,
सच है मानव धर्म निभाया हमने बिना किसी भय के।

हम 'प्रसून' हैं महक बिखेरी सभी जगह अपनेपन की,
भावुक मन-आत्मा वाले हम कायल रहे न अभिनय के।

28

आसमानों में भर उड़ान कभी।
ऐसा कुछ सोच ले इंसान कभी।

खाली यूँ बैठ कर न कुछ होगा,
लक्ष्य पर होम कर दे जान कभी।

तू न जन्मा है मात्र जीने को,
इतना कहना तो मेरा मान कभी।

तू तो इतिहास की रगों में है,
क्यों न आया तुझे ये ध्यान कभी।

तूने यश-कीर्ति की सुधा पी है,
इसका भी तो लगा अनुमान कभी।

बैठो आलस्य में न ऐसे 'प्रसून',
जीना इतना नहीं आसान कभी।

29

चेहरा समाज का हुआ नृशंस देखना।
फलने लगा है राक्षसों का वंश देखना।

वो मानसरोवर में टुकड़े माँस के खोजे,
मोती नहीं चुगेगा कभी हंस देखना।

वह दिन भी नहीं दूर है साक्षात दिख रहा,
करने लगेगा अट्ठहास कंस देखना।

ऐसी विष भरी पवन चली तो सत्य है,
अवतार लेगा एक दिन प्रभु-अंश देखना।

कोरी नहीं है कल्पना परमाणु युग है ये,
होने जो जा रहा है वो विध्वंस देखना।

मर-मर के नित्य जीना सरल है नहीं 'प्रसून',
आसान नहीं आत्मा के दंश देखना।

30

हृदय के राजकुँवरों की सवारी भी निकल पड़ती।
अगर तुम मान जाते तो हमारी भी निकल पड़ती।

तुम्हीं को देखतीं आँखें सभी की बारी-बारी से,
जो अपनी आती बारी तो ये बारी भी निकल पड़ती।

है ईश्वर की कृपा तुम पर गुलाबों से महकते हो,
जो मिलती चुटकी भर खुशबू तो यारी भी निकल पड़ती।

नयन के दीप जल-जल कर तुम्हारा रास्ता देखें,
भरी आँखों में जन्मों से खुमारी भी निकल पड़ती।

तुम्हारे बिन तुम्हारे बिन फँसी जो टीस साँसों में,
तुम्हें जो देख लेती ये बेचारी भी निकल पड़ती।

शरीरों के मिलन से भी अहम् आत्माओं का मिलना,
जो मिलती आत्मा इच्छा कुँवारी भी निकल पड़ती।

हमारे और तुम्हारे बीच में यदि कोई आ जाये,
तो सच है अपने हाथों की दुधारी भी निकल पड़ती।

31

दर्पण हमें दिखला रहा चेहरा जो आज का।
देखा था हमने एक दिन सपना स्वराज का।

शामिल बलात्कारियों की पंक्ति में हम भी,
बनना है मार्गदर्शक हमको समाज का।

हमने भरे गोदाम अनावश्यक नहीं कभी,
ठहराये हमको कोई भी दुश्मन अनाज का।

भ्रष्टाचरण के दोषी हैं स्वीकार है हमें,
लालच हमें भी खींचता है तख्तो-ताज का।

जो चाहते हैं हम वही कहते हैं जान लो,
हमको कोई भी डर नहीं रस्मो-रिवाज का।

हम दूर की ही सोचते और दूर तक देखें,
हमको है संस्कार मिला गिद्धो-बाज का।

शामिल हैं अपने साथ सभी लोग ये 'प्रसून',
चालक बनाया हमको सभी ने जहाज का।

32

यही वास्तविकता नहीं वास्तविकता।
कलम का सिपाही न सच्चाई लिखता।

भले गूढ़ कितना हो जीवन का दर्शन,
सभी छद्मवेषी न मौलिक है दिखता।

कलमकार सच्चा तो मिलना कठिन है,
वो सत्ता के हाथों अजाने ही बिकता।

जो योद्धा कलम का न पीछे हटेगा,
कलम कर में होगी सही मानसिकता।

वही लिख सकेगा यहाँ युग का दर्शन,
हृदय में भरी जिसके हो मांगलिकता।

कोई स्वार्थी पाँव रखने न पाया,
न चिंतन में जिसके रही सात्विकता।

'प्रसून' ऐसा पथ ये सरल जो नहीं है,
सदा लेखनी में भरो आत्मिकता।

33

हम लोगों के मन में होंगे।
प्रभु अपने आँगन में होंगे।

बूँद-बूँद सुख वर्षा करके,
बारिश बन सावन में होंगे।

फूलों-कलियों में रच बस के,
खुशबू बन मधुवन में होंगे।

वेद उपनिषद में गीता में,
खोजो रामायण में होंगे।

जल में थल में हर एक पल में,
प्रभु जग के कण-कण में होंगे।

प्रण कर भक्ति करो ईश्वर की,
आध्यात्मिक दर्शन में होंगे।

गुरु की कृपा 'प्रसून' मिले तो,
आत्मा के दर्पण में होंगे।

34

दर्पणों को करों से गहती है।
एक प्रस्तर शिला सी ढहती है।

आँख भरती छलक छलक जाती,
एक अरसे से रोज बहती है।

सुनता कोई है या नहीं सुनता,
पीर मन की सभी से कहती है।

कह न पाती है पीर मानस की,
त्रासदी की व्यथायें सहती है।

गर्म आँसू हैं सर्द साँसें हैं,
जाने कैसे सिमट के रहती है।

अश्रु जब भी ढुलकते गालों पर,
आत्मा अग्नि में ही दहती है।

जिंदगी की अलग कथा है ये,
वश में अपने कभी न रहती है।

35

एक सार्थक प्रयास करना है।
शून्य में सूर्य बन उभरना है।

दर्द को जीतना तो मुश्किल है,
इसकी छाती पे पाँव धरना है।

प्रस्तरों को भी तोड़ता जाता,
पर्वतों से गिरा जो झरना है।

अब थकन को उतार फेंकेंगे,
देह में चेतनायें भरना है।

मृत्यु आयेगी एक दिन तय है,
किन्तु अब नित्य ही न मरना है।

चिंता मानव की है चिता कोई,
जिसको हम सबको मिल के हरना है।

बीते कल की 'प्रसून' जाने दो,
कल जो आये उसे सँवरना है।

36

तू तेल देख तेलवाली धार को भी देख।
गर्दन पे चलने वाली जो तलवार को भी देख।

साकार हो रहे नृशंस दृश्य आज के,
आने लगे जो सामने आसार को भी देख।

दो गज जमीन भी न बचेगी किसी के पास,
टुकड़ों में बँटे जा रहे परिवार को भी देख।

कर देगा एक दिन जला के क्षार सभी को,
दहके जो साँस-साँस में अंगार को भी देख।

पग जा रहे कहाँ हैं हाथ जा रहे कहाँ,
तू धरती-आसमान के आधार को भी देख।

हरगिज न शेष ज़िंदगी बस मृत्यु शेष है,
इस पार तो देखा बहुत उस पार को भी देख।

क्या रोक पायेगा कभी होना जो शेष है,
जो तुझपे होने जा रहा उस वार को भी देख।

कोई तो बोलेगा यहाँ दो शब्द प्यार के,
नफरत तो देखी खूब है मनुहार को भी देख।

ऐसे न समझ पायेगा आध्यात्म कह रहा,
जीवन नहीं जीवन में छिपे सार को भी देख।

बेशक तू जीतता रहा हर एक युद्ध में,
अब सामने जो आ रही उस हार को भी देख।

जो भी 'प्रसून' हैं किये अपराध याद कर,
अब होनी ईश्वरीय जो उस मार को भी देख।

37

जंगलों में खड़ा मचान नहीं।
वक़्त पे तीर या कमान नहीं।

वो भी महलों की बात करता है,
जिसके सिर पे है आसमान नहीं।

मैं हूँ इंसान मेरा सच है ये,
ये भी सच है कि मैं इंसान नहीं।

आप पर होगा बात अच्छी है,
वक़्त हम पे है मेहरबान नहीं।

इसकी दाँतों में दबा रक्खा है,
ये न समझो मेरे जबान नहीं।

हर घड़ी क्रय की बात करते हो,
जिंदगी वस्तु या मकान नहीं।

आपको बोलने से रोके 'प्रसून',
ऐसा कोई भी संविधान नहीं।

38

अनागत पर विजय पायें हमारे प्यार की किरणें।
नया इतिहास रच डालें मधुर संसार की ग़ज़लें।

हमारी कल्पनाओं ने भविष्यत को सँवारा है,
सँवारें ज़िंदगी की लय प्रकृति-उपहार की किरणें।

तृषा के इन समुद्रों को पियेगी मन की मृगतृष्णा,
रचेंगी तप्त साँसों पर प्रलय-अंगार की किरणें।

समय के वक्ष पर प्रतिपल हमारे पाँव चलते हैं,
हमारे हाथ ढोते हैं असीमित भार की किरणें।

निशा के होंठ पर स्वप्निल नियति के फूल खिलते हैं,
उषा के भाल को चूमें गगन-विस्तार की किरणें।

धरा की आत्मा कहती युगों की कब्रगाहों से,
मनुजता झेलती अणु के सचेतन वार की किरणें।

विगत के दर्द को भूलें 'प्रसून' आगत की आशायें,
हमारी उँगलियाँ छू लें सृजन-संसार की किरणें।

39

तेरे होंठों के पास होती है।
तो ग़ज़ल में मिठास होती है।

शक्ल गढ़ती है ये समाजों की,
लेखनी संगतराश होती है।

ऐसी काया जो बोझ बन जाये,
वो तो बस जिंदा लाश होती है।

तू जो हँसती है महमहा करके,
तो हँसी वन पलाश होती है।

एक मरुथल के जल सरीखी है,
ज़िंदगी ऐसी प्यास होती है।

आपको हमसे हमको औरों से,
दोस्त कोई तो आस होती है।

वो बात कल को आम होगी 'प्रसून',
बीते कल की जो खास होती है।

40

लक्ष्य बेशक हुजूर मिलता है।
एक अवसर जरूर मिलता है।

पंख से हीन आज मधुवन में,
नाचता हर मयूर मिलता है।

जो भी मिलता है वो किसी न किसी,
नशे में चूर-चूर मिलता है।

झूठे खातों बही-किताबों में,
अपना बँधुआ मजूर मिलता है।

माँग ऐसी कि जो भरी ही नहीं,
उसको भी तो सिंदूर मिलता है।

संग अब तक रहा जो साये सा,
शख्स वो दूर-दूर मिलता है।

आज हर आदमी के अंतर में,
पर्वतों सा गुरूर मिलता है।

व्यक्ति को देवता बनाता जो,
मुश्किलों से वो नूर मिलता है।

कहना मुश्किल नये-पुराने में,
किसमें ज्यादा फितूर मिलता है।

कहने की बात ये नहीं है 'प्रसून',
अनुभवों से शऊर मिलता है।

41

एक तीखी कटार है यारो।
ये ग़ज़ल धारदार है यारो।

इसमें उन्माद की सुरा भी है,
नशा भी बेशुमार है यारो।

आपने वार आर–पार किया,
दर्द भी आर–पार है यारो।

खुद जियो दूसरों को जीने दो,
ये ही जीवन का सार है यारो।

जो मेरा कत्ल करने आया है,
वो मेरा अपना यार है यारो।

चंद सिक्कों के साथ में गाली,
ये ही श्रम की पगार है यारो।

मेरी ग़ज़लों ने जो भी बाँटा है,
वो मेरे मन का प्यार है यारो।

42

कभी थे अमृत सरीखे अब हो गये जहर से।
हैं दिन न जाने कैसे गये आजकल ठहर से।

तू मेरी आत्मा से कुछ ऐसे मिल गया है,
गंगा की एक लहर ज्यों मिले दूसरी लहर से।

इंसान की है स्वीकृति शैतान की है चाँदी,
सीधे शरीफ सच्चे लगे भागने शहर से।

जैसे कि पत्थरों से टकरा के शीश लौटे,
वैसे ही शब्द लौटे अनुभूति की डगर से।

छै-सात घर तबाही की आग से हैं झुलसे,
कैसे इरादे लेकर निकले थे आप घर से।

हुआ कत्ल भावना का अर्थी उठी दया की,
ये दर्द के कटोरे गये आँसुओं से भर से।

ओ आसमान वाले सुन ले जो सुन सके तू,
इंसान को बचाना हर हाल में कहर से।

तू प्यार का है भूखा मेरे मन के बाल पंछी,
उन्हें फिर गले लगा ले जो गिर गये नज़र से।

कुछ हैं 'प्रसून' अपना जो लक्ष्य भूल बैठे,
ज्यों मूल रूप खोकर हटती ग़ज़ल बहर से।

43

देखी न हो तो देख लो करीब से नदी।
लगता किसी ने चीर दी हो बीच से नदी।

वो एक जैसा ही करे व्यवहार सबके साथ,
जल को नहीं छिपाती है गरीब से नदी।

कैसे लहर-लहर समेट पाओगे कहो,
हरगिज न पी सकोगे कभी जीभ से नदी।

मिलती नहीं सभी को मिले मुश्किलों से ये,
मिल जाये तो समझो मिली नसीब से नदी।

इसकी विराट जल की राशि यूँ भली लगे,
जैसे कि जगमगाये जले दीप से नदी।

इसको न बाँध पाओगे है मुक्त आत्मा,
काबू न आयेगी किसी तरकीब से नदी।

मँझधार से कटते हुए देखा कभी इसे,
कटती हजार बार जो कि तीर से नदी।

उपकार करके सबका ये प्रसन्न चित्त हो,
बहती है अपने बूते ही तकदीर से नदी।

इसपे असंख्य वार हुए शांत ही रही,
उफ भी 'प्रसून' करती नहीं टीस से नदी।

44

हाथों में हाथ थे शिखर थे शांत जलप्रपात।
कर ही लिया था आत्मा ने तुमको आत्मसात।

जीवन है देन ब्रह्म की तो नष्ट मत करो,
मन में न लाओ ये कभी कि कर लें आत्मघात।

श्रीहीन चीत्कार करके हो उठेगी वो,
जो एक ओर तुम हो एक ओर कायनात।

धीरज धरो प्रयत्न करो तो सफल बनो,
हर रोज नई बात लायेगा नया प्रभात।

हर हाल में ढलना है उसको भोर आनी है,
घनघोर बन के आये भले ही तमाम रात।

इसको न अहम की तुला से आप तौलिये,
गल जायेगा ये मोम बनके आदमी का गात।

पल-पल का सदुपयोग कर सको करो 'प्रसून',
झर जायेंगे शरीर के ये सारे फूल-पात।

45

पंछी थे दोनों मुक्त और क्या लगाव था।
एक दौर वो भी गुजरा है कितना तनाव था।

गंगा-गनेशा-मंगली का पेशा एक था,
तीनों का भाव एक, एक ही अभाव था।

करना है खत्म बैर को दुश्मन को मार दो,
थे कितने क्रूर व्यक्ति उनका क्या सुझाव था।

भीगी थी भावनायें और सर्द रात थी,
साकार दो शिलायें थीं जिनमें अलाव था।

तुम दूरियाँ बढ़ा रहे हो हम घटा रहे,
जहाँ आज एक झील है पहले तलाव था।

लहरों में असन्तोष था धारा में रोष था,
एक अन्तहीन सिलसिला उलटा बहाव था।

मत भूल उसे प्यार से मैंने ही भरा है,
जो आज शेष दाग है एक दिन तो घाव था।

वो तेरी थी पसन्द एक अश्लील आत्मा,
भगवान जाने तेरा वो कैसा चुनाव था।

हम तुम जहाँ रुके-थके निढाल हो गये,
वो देह की नगरी का ही अंतिम पड़ाव था।

रहते जो मौन आज का ये दौर न होता,
कभी सोच तेरी बात का कैसा प्रभाव था।

उसने 'प्रसून' अपनी ओर से न कुछ कहा,
आँखों में प्रश्न प्यास का उन्मुक्त भाव था।

46

लानतें भेजिये जमाने पर।
वक़्त बारूद के दहाने पर।

देश आतंक में जिये कैसे,
सभ्यता आ गई रुलाने पर।

रो सको जितना, छूट है तुमको,
बंदिशें किन्तु मुस्कुराने पर।

अपनी ही जान डाली जोखिम में,
अपने हाथों लिये बयाने पर।

एक दिन आप पर भी लगनी हैं,
बोलियाँ रूप की लगाने पर।

ज़िंदगी भागती हिरन बन के,
एक बस आपके ही आने पर।

भोर का आगमन हुआ लेकिन,
रात की कालिखें मिटाने पर।

आज मायूस सृष्टि सारी है,
आपका साथ छूट जाने पर।

इसको अपनी तरह उठा रखिये,
कट भी सकता है सिर झुकाने पर।

47

इस धरती पर किस्मत ने क्या खेल दिखा डाले हैं।
मानव की रातें भी काली हैं दिन भी काले हैं।

कैसा गजब कि चलते-चलते पाँवों पड़ी बिवाई,
करते-करते काम हथेली के फूटे छाले हैं।

आँखों में ज्वालामुखियाँ मन में आक्रोश भरे हैं,
हम सब अपनी अन्तरात्मा में विषधर पाले हैं।

इन साँसों में सदियाँ बीतीं समझ नहीं पाये,
ऐसे दावानल सुलगे हैं जीवन के लाले हैं।

यही ज़िंदगी कभी मरुस्थल कभी सिंधु होती है,
इसी ज़िंदगी के साँचे इंसानों ने ढाले हैं।

देखा नहीं कि कैसे-कैसे कर्म यहाँ होते हैं,
जो कि हमारे आप सभी के भी देखे-भाले हैं।

सच-सच कहना तुम 'प्रसून' किस भाँति यहाँ जीते हो,
जिन्दा आँखों पर मुर्दा उम्मीदों के जाले हैं।

48

हो गया जग में जाहिर झुका।
स्वाभिमानी था आखिर झुका।

पुण्य में हाथ जिनके लगे,
उनके कदमों पे मंदिर झुका।

कैसा अचरज विधाता! हुआ,
मेरे सम्मुख वो शातिर झुका।

रक्त-रंजित पगों को लिये,
पा के मंजिल मुसाफिर झुका।

था न झुकना जहाँ क्यों वहीं,
शर्म की बात है सिर झुका।

रूप के सिन्धु को देखकर,
बनके बादल वो घिर-घिर झुका।

है 'प्रसून' ऐसा क्या आपमें,
लक्ष्य सम्मुख ही गिर-गिर झुका।

49

शब्द जीवन्त भी तो होते हैं।
वृक्ष हैं वृंत भी तो होते हैं।

शब्द में ओज की भी ऊर्जा है,
शांति प्रिय संत भी तो होते हैं।

दुःख यदि साथ–साथ हों तो क्या,
एक दिन अन्त भी तो होते हैं।

जिनकी मीठी जुबान मिश्री सी,
उनके विषदन्त भी तो होते हैं।

रात रानी खिले तो क्यों न खिले,
सूर्यमुख कन्त भी तो होते हैं।

इतने सारे वृहन्नलाओं में,
पार्थ गुणवन्त भी तो होते हैं।

एक भी बात पर न टिकते 'प्रसून',
ऐसे श्रीमन्त भी तो होते हैं।

50

जब अपनों से ही उपेक्षित होना पड़ता है।
कोई ज्वालामुखी हृदय में बोना पड़ता है।

छाती पर लेनी पड़ती है चोट शिकारी की,
घायल मृगछौना बन आँख भिगोना पड़ता है।

कर लेना पड़ता है कोई दृढ़ संकल्प नया,
अविभाजित आकाश पीठ पर ढोना पड़ता है।

आंदोलित हो आत्मसिंधु जो फेन उगलता है,
उससे आगत के सपनों को धोना पड़ता है।

महाअनल भर कर आँखों में गंगाजल पीकर,
तूफानों को साँसों बीच पिरोना पड़ता है।

यदि लगती है ठेस किसी भी कलाकार मन को,
तो निश्चित है जग को भी कुछ खोना पड़ता है।

नहीं प्रसूनों की ये केवल बात सभी की है,
पिछली सुधियों वाले सुमन पिरोना पड़ता है।

51

जीवन आठोंयाम पढ़ा क्या मैंने ही।
कभी छाँह या घाम पढ़ा क्या मैंने ही।

मन के कागज पर सदियों से लिखा हुआ,
अभी तुम्हारा नाम पढ़ा क्या मैंने ही।

मानव की आत्मा की प्रतिमा देवों सी,
अचरज में हैं राम पढ़ा क्या मैंने ही।

बिकने को तैयार खड़े हैं सूची में,
कभी स्वयं का दाम पढ़ा क्या मैंने ही।

चेहरों पर अंकित श्रद्धा के श्लोकों को,
सोच रहे घनश्याम पढ़ा क्या मैंने ही।

अपना जीवन भी रामायण की प्रति है,
इसे सुबह या शाम पढ़ा क्या मैंने ही।

क्या होगा 'प्रसून' औरों पर व्यंग्य करे,
क्या होगा परिणाम पढ़ा क्या मैंने ही।

52

चेहरों पे तिमिर धारे सपन जलने लगे हैं।
कैसे कहें बेचारे सपन जलने लगे हैं।

सूखे पड़े हैं खेत जरा ध्यान दीजिये,
खलिहानों के किनारे सपन जलने लगे हैं।

मौसम भी इसे देख परेशान हो गया,
घर-घर के वे दुलारे सपन जलने लगे हैं।

पलकों से गिरे और भूमि पर बिखर गये,
वे व्योम से उतारे सपन जलने लगे हैं।

कुछ तो बताओ क्या करेंगे कैसे जियेंगे,
जिनके थे हम सहारे सपन जलने लगे हैं।

अब राख ही बटोर लें जो राख ही मिले,
आँखों के आज प्यारे सपन जलने लगे हैं।

अब रोकिये बारात को जाने न दीजिये,
शादी से पहले क्वाँरे सपन जलने लगे हैं।

ऐसी चली हवा 'प्रसून' राख हो गये,
पुरवाईयों के मारे सपन जलने लगे हैं।

53

अभिशापों में अब न जियेंगे।
जहर तनावों का न पियेंगे।

जिस धरती पर खड़े हुए हैं,
उस धरती पर साँस न लेंगे।

अब तक जो कुछ भोगा हमने,
उसको ब्योरेवार लिखेंगे।

अब तक तो बस ऐसे ही थे,
अब से सबसे अलग दिखेंगे।

जीवन के इस राजमार्ग पर,
जीवन का इतिहास रचेंगे।

हमें तोड़ लो हम 'प्रसून' हैं,
चाहें भी तो बच न सकेंगे।

54

भूलो सभी व्यथायें नया साल आ गया।
तुमको यही बतायें नया साल आ गया।

फूलो-फलो बहार की तरह महक उठो,
मन तुमको दे दुआयें नया साल आ गया।

होना न परेशान जो ये दिन गुजर गये,
अब इनको सर झुकायें नया साल आ गया।

ऐसे जियो जमीन पर सूरज उतार लो,
तम को नहीं जगाये नया साल आ गया।

अब साथ दो तो प्रीति की दुनिया नई रचें,
महकी हुई हवायें नया साल आ गया।

श्रम की भगीरथी में हँसे कामना नई,
श्रम के कलश उठायें नया साल आ गया।

माली जो श्रम करे तो खिले भावना 'प्रसून',
श्रम की पढ़ें ऋचायें नया साल आ गया।

55

मौसम के रूमाल सामने आते हैं।
सुधियों वाले ताल सामने आते हैं।

आँखों के आगे रेतीले सपनों के,
जलते हुए सवाल सामने आते हैं।

हर कोई अपनी रक्षा को व्याकुल है,
लेकर सुदृढ़ ढाल सामने आते हैं।

जिनके आँगन सुख की सुविधायें सभी,
वही नोचते खाल सामने आते हैं।

जो कि वायु का एक थपेड़ा सह न सके,
लेकर वह भूचाल सामने आते हैं।

बीते कल के वर्तमान के आगत के,
सिक्के नये उछाल सामने आते हैं।

क्या कर लोगे लोगों का 'प्रसून' बोलो,
लोग लिये करवाल सामने आते हैं।

56

तड़पे जल में मीन मछेरा क्या कर ले।
फटने लगी जमीन चितेरा क्या कर ले।

भीख माँगने लगी भीड़ याचक बनकर,
हर चेहरा है दीन लुटेरा क्या कर ले।

अब कोई भी साँप न फन लहराता है,
टूट चुकी हर बीन सपेरा क्या कर ले।

कामधेनु के स्वप्न काँच से बिखर गये,
सूखे थन में लीन बछेरा क्या कर ले।

मलिन हो गया सूर्य रश्मियों के तन पर,
तिमिर हुआ आसीन उजेरा क्या कर ले।

वातावरण एक जैसा घर-बाहर का,
देहरी का संगीन अँधेरा क्या कर ले।

लगते हैं 'प्रसून' मौसम के घाव हरे,
मौसम का रंगीन सबेरा क्या कर ले।

57

जिस आँगन में कभी सुनी थी अपनेपन की एक ग़ज़ल।
आज उसी आँगन में जलते देखा ममता का आँचल।

तुम्हें लिख रहा हूँ पढ़ लेना आँसू में भीगे सपने,
साँस-साँस में दहक रहा है मनुहारों का ताजमहल।

अलग-अलग हैं लक्ष्य सभी अलग-अलग सबका जहान है,
अलग-अलग है शोक सभी का अलग-अलग है चहल-पहल।

ऐसा भी कुछ हो जाता है कभी-कभी इस जीवन-पथ में,
जिसे देखकर क्रूर व्यक्ति का भी जाता है हृदय दहल।

काश! आदमी अनुभव करता कभी दूसरे मन की पीड़ा,
तब शायद संभव हो पाता जीवन जीना बड़ा सरल।

हम उदास तब हो जाते हैं जब कुछ घटने वाला होता,
मन तब करता है पी जाये सारे जग का तीक्ष्ण गरल।

क्या 'प्रसून' वह दिन आयेगा जब कि नृत्यरत आत्मा होगी,
एक दूजे के हित की खातिर सभी करेंगे प्रथम पहल।

58

लावारिस शव जैसे बीच नदी के कोई बहता है।
सपनों का प्राचीन खण्डहर कुछ वैसे ही ढहता है।

कर देता आत्मा तक अर्पित किसी और के सम्मुख वो,
अपने मन की बात कोई जब किसी और से कहता है।

अनुभव यदि कर सको करो वह कैसी आत्मग्लानि में है,
हरगिज मत पूछो वह सौ सौ त्रासदियाँ क्यों सहता है।

अंधी दुनिया क्या समझेगी गूँगे जीवन की पीड़ा,
जीवन जीने वाला गूँगी पीर लिये बस दहता है।

अंतर इतना है 'प्रसून' बस पढ़े-लिखे में अनपढ़ में,
पढ़ा लिखा सीमा से बाहर अनपढ़ भीतर रहता है।

59

तुम आदमी जरूर हो इंसान तो नहीं।
सच कह रहा हूँ मैं गलत अनुमान तो नहीं।

जो गलतियाँ हो कर रहे उनको सुधार लो,
आयेगा टोकने तुम्हें भगवान तो नहीं।

साँसें भी ले रहे हो साँस तोड़ते भी हो,
साँसों के बीच में फँसे हैं प्राण तो नहीं।

गरदन झुकाओगे तो कुचल दी ही जायेगी,
ये ज़िंदगी जीना बड़ा आसान तो नहीं।

जिनमें न दीन के लिये सहानुभूति हो,
ऐसों का ही करते रहे गुणगान तो नहीं।

काला-सफेद कर रहे हो जो भी सत्य है,
तुम कर रहे जो दान सच्चा दान तो नहीं।

शव जल रहे इच्छाओं के देखों यहाँ वहाँ,
रहते 'प्रसून' तुम जहाँ श्मशान तो नहीं।

60

है गहरी झील झील में उतर रहे हो क्यों?
जो करने वाला कर्म नहीं कर रहे हो क्यों?

वातावरण विषाक्त है जरा ध्यान भी तो दो,
तिल तिल के ज़िंदगी के लिये मर रहे हो क्यों?

कठिनाइयों भरा हर एक मार्ग है यहाँ,
साहस को छोड़ कापुरुष से डर रहे हो क्यों?

जुड़ना था तुमको चुंबकों से चुंबकों सा ही,
मुट्ठी में भरी रेत से बिखर रहे हो क्यों?

स्वर्णाक्षरों से नाम तुम्हारा लिखा गया,
फिर आज कहो धूल के अक्षर रहे हो क्यों?

तुमको तो कल्पवृक्षों की छाया सघन मिली,
पर आज सूखी पत्तियों से झर रहे हो क्यों?

जीवन में कभी कर्ज तो लिया नहीं 'प्रसून',
फिर किसका कौन सा ये कर्ज भर रहे हो क्यों?

61

इस समय जो लोग अपने सामने हैं।
भेड़िये की राह तकते मेमने हैं।

वे भला वटवृक्ष कैसे बन सकेंगे,
खोखले जिनके अभी से ही तने हैं।

आचरण की बात करते हैं अभागे,
स्वयं ही घटिया विचारों के जने हैं।

भावनाओं की नदी बहती चली जाये,
हर लहर की देह पर भाले तने हैं।

जो हमें देंगे दिशा नव ज़िंदगी की,
पृष्ठ वे सारे सभी को बाँचने हैं।

बेच दें ईमान छोटी बात पर ये,
हाथ इनके बेईमानी में सने हैं।

वे अभी ढह जायेंगे क्षण मात्र में ही,
जो भवन कमजोर गारे से बने हैं।

62

क्यों भूमि से आकाश तक जाते बिखर नहीं।
हम चाहते हैं जो हमें मिलते वो स्वर नहीं।

हम आदमी बने रहें इसके लिये सुनो,
हम आदमी को प्यार दें विष या जहर नहीं।

कहने की बात और है करने की बात और,
ये बात सच तो है मगर कहते अधर नहीं।

कहने लगी बुराई से भलाई एक दिन,
तुम आ सको आओ इधर जाओ उधर नहीं।

वैभव ने एक से कहा फुटपाथ पर न सो,
उसने कहा कि इसके सिवा और घर नहीं।

मौका मिला तो फिर कभी पूछेंगे एक बात,
तुम पर किसी की बात का क्यों है असर नहीं?

खिलते हुए 'प्रसून' से लोगों ने ये कहा,
तुम बाँटते हो खुशबुयें पर मुक्त कर नहीं।

63

मन तो शत-शत सुमन पिरोता है।
किन्तु पलकें समय भिगोता है।

स्वप्न मत देखना कि स्वप्नों में,
एक ज्वालामुखी भी होता है।

तुम जो कहते हो ठीक ही होगा,
भाग्य अपना कहीं पे सोता है।

सूर्य जैसे शनै-शनै चढ़ता,
अपना अस्तित्व स्वयं खोता है।

सारा मधुवन ही महमहा जाता,
कौन अब ऐसे बीज बोता है।

तेरे होंठो की गुनगुनाहट से,
हंस अपने परों को धोता है।

उसके आँसू तो कोई पोंछे 'प्रसून',
एक शिशु सांत्वना का रोता है।

64

भरी बारिश में हमें आग को बचाना है।
द्वेष के दौर में अनुराग को बचाना है।

शब्द घायल हुए जाते हैं इनकी रक्षा में,
अर्थ की आत्मा के राग को बचाना है।

गुनगुनाते हुए जीते रहे टूटे भी तो,
तभी मन पर लगे हर दाग को बचाना है।

हमको मिलना था मिला जो भी भाग्य में आया,
ऐसी किस्मत से मिले भाग को बचाना है।

टिमटिमाती हुई लौ जैसी चल रहीं साँसें,
प्रीति के डूबते सुहाग को बचाना है।

कितने तूफान चले आये हैं देखो इनसे,
नई पीढ़ी के नये बाग को बचाना है।

जिसे भूले सभी बैठे न याद करते हैं,
रूठे प्राणों में बसे त्याग को बचाना है।

65

वक़्त का रुख जानलेवा है।
हर एक दुख जानलेवा है।

आप पर जान वार कर रख दी,
आपका मुख जानलेवा है।

है तो आशीष सा मगर शापित,
प्राप्त हर सुख जानलेवा है।

मित्र तो हैं अनेक पर उनमें,
मित्र जो प्रमुख जानलेवा है।

हाथ में आये और उड़ जाये,
ऐसा कालशुक जानलेवा है।

देह तो कांचनीय कोपल है,
रूप भी उफ जानलेवा है।

आज का युग 'प्रसून' कल्युग है,
इसमें सब कुछ जानलेवा है।

66

गगनवेधी उड़ानों में किये शामिल गये हम भी।
बड़ी ऊँची दुकानों में किये शामिल गये हम भी।

सदा महकाये हमने भी सृजन के फूल राहों में,
सफलतम बागबानों में किये शामिल गये हम भी।

मगर हमने मिटा डाला निजी अस्तित्व भी अपना,
यशस्वी कीर्तिवानों में किये शामिल गये हम भी।

बड़ा रोमांचकारी और सरल जीवन रहा अपना,
बड़े सच्चे बयानों में किये शामिल गये हम भी।

हमें गौरवान्वित करती रही यह बात हर पल ही,
बड़े-बूढ़े-सयानों में किये शामिल गये हम भी।

कई शरणागतों के सिर पे रक्खे हाथ हमने भी,
सुरक्षित तम ठिकानों में किये शामिल गये हम भी।

'प्रसून' हमने भी कड़ुवे घूँट अक्सर ही पिये लेकिन,
कई मीठी जबानों में किये शामिल गये हम भी।

67

हाथ कोरे मले गये आखिर।
तुम पिता थे चले गये आखिर।

जम गई है नसों में हिम जैसे,
रक्त की आग ले गये आखिर।

अब तो हर एक पल है फाँसी सा,
फन्दे पड़ते चले गये आखिर।

तुम थे तो ज़िंदगी में खुशियाँ थीं,
दुख की पर्तों तले गये आखिर।

अब मुख में हैं शब्द अस्फुट से,
जैसे हो तोतले गये आखिर।

तुम थे अनमोल हो गया साबित,
सिक्के कितने ढले गये आखिर।

पंच तत्वों के हो गये हो 'प्रसून',
बर्फ जैसे गले गये आखिर।

68

जो सारस्वत रही कविता।
हमारी मृत हुई कविता।

वही विष हो गई हमको,
जो थी अमृत हुई कविता।

अँधेरा कर गई मन में,
दिये का घृत हुई कविता।

निहारें घाटियों से हम,
अचल पर्वत हुई कविता।

हुआ वातावरण ऐसा,
निरावृत हो गई कविता।

किसी की जीविकोपार्जन,
हमें तो लत हुई कविता।

परम वे भाग्यशाली हैं,
जिन्हें अक्षत हुई कविता।

69

आँधी हो या तूफ़ान हो या चक्रवात हो।
तुम साथ हो तो साथ पूरी कायनात हो।

जब बात तुमसे होती नहीं रूठती बहार,
यह सृष्टि गुनगुना उठे जो तुमसे बात हो।

कैसे न कहो तुमसे कहें पीर मन की हम,
तुमसे बिछड़ के दो घड़ी का आत्मघात हो।

देखें जो तुम्हें चाँदनी में चाँदनी से हों,
देखें जो तुम्हें भोर में सोने का प्रात हो।

तुम सी सुदर्शना जो हो सम्मुख तो सच यही,
कैसा हो आध्यात्म पल में आत्मसात हो।

हम तुमको हार सकते नहीं एक पल को भी,
जीवन की या शतरंज की कोई बिसात हो।

हम तुमको पढ़ते ही रहें यह बात तय रही,
अंतिम जमात हो या वो पहली जमात हो।

तुमको छुआ तो छू के हम पारस हुए 'प्रसून',
तुम हमको एक बार छू लो वज्रपात हो।

70

साँसें करें फरेब तो ये काया क्या करे?
मन में कहीं वैराग हो तो माया क्या करे?

बेटे ने बूढ़ी माता से जो दृष्टि फेर ली,
माँ अपने मन को बोलिये समझाया क्या करे?

जब आप पे ही खुलते नहीं द्वार आपके,
फिर आपके द्वारे पे कोई आया क्या करे?

बच्चे तो हर एक व्यक्ति के होते हैं दुलारे,
बच्चे के लिये द्वेष मन में लाया क्या करे?

अपने ही जाये बेटे की जो मौत माँगता,
वो बूढ़ा ऐसी सोच पे है आया क्या करे?

गई धूल आँख में तनिक सी अश्रु बह चले,
वो आँधियाँ जो पलकों में भर लाया क्या करे?

वो जा नहीं सकता कभी भी द्वार छोड़ के,
ऐसी जगह पे उसको है ठहराया क्या करे?

उससे कोई गुनाह ऐसा हो गया 'प्रसून',
वो अपने आप खुद से है शरमाया क्या करे?

71

स्वप्न टूटा तो अश्रु भर आये।
ये हुआ किन्तु कुछ न कर पाये।

एक घर चाहतों भरा टूटा,
एक सच मन को तोड़ता जाये।

सामने शव पड़ा अनागत का,
दर्द के दर्दनाक हैं साये।

हम कहाँ मानते मगर माने,
मोह के मोहपाश भरमाये।

क्या भला मानवों का करते हैं,
घूमते जो जटायें बिखराये।

दो जुबानें लिये वे मुख में हैं,
अपनी माता के हैं नहीं जाये।

कैसा होगा भविष्य क्या जाने,
जो शराबों की दौड़ में धाये।

काम आया 'प्रसून' क्या जल ये,
जाने किन-किन कुँओं से भर लाये।

72

सोच के जंगलों का वासी है।
इसलिये मन में ये उदासी है।

कोई दावाग्नि इसको झुलसा दे,
आत्मा इसलिये न प्यासी है।

जो फुदकती रही है जीवन की,
शाख पर वो कोई बया सी है।

चेहरों पर जो मोह की छाया,
मानवों के गले की फाँसी है।

काम की रूपसी छलावा है,
संत के पद्म पग की दासी है।

शीश पर हाथ फेरे स्नेहिल जो,
वो कोई और नहीं माँ सी है।

साँसें रुकतीं 'प्रसून' हों जैसे,
ऐसी चलने लगी हवा सी है।

73

हम तो बस सोचकर ही रह जाते,
अन्यथा इस नदी में बह जाते।

किसी प्राचीन दुर्ग के जैसे,
बनते-बनते विचार ढह जाते।

हम तो दावाग्नियों से दूर रहे,
वरना सच कब के इसमें दह जाते।

अपनी क्षमताओं को भी आँका है,
बोझ वरना कहाँ ये सह जाते।

मार्ग अवरुद्ध सोचिये कैसे,
उस तरफ और किस तरह जाते।

कहना हरगिज नहीं जरूरी जो,
कैसे तुमसे वो बात कह जाते।

था न सम्भव 'प्रसून' जीवन में,
बिन बुलाये किसी के गृह जाते।

74

किसी दर्द की झील सरीखी ज़िंदगी।
दर्शन दो हे राम कि चीखी ज़िंदगी।

अमृत बना दो हाथों से छूकर इसे,
कालकूट विष जैसी तीखी ज़िंदगी।

प्रेम की गंगा में नहला देना प्रभो,
द्वेष युक्त भाषा है सीखी ज़िंदगी।

आत्मा को रामालय सा कर दीजिये,
हमें राममय हर पल दीखी ज़िंदगी।

कितनी दुर्गम पथरीली राहों वाली,
कैसी कठिन असाध्य सदी की ज़िंदगी।

एक छिद्र भी हुआ अगर तो डूबेगी,
मानव की ही भाँति तरी की ज़िंदगी।

अधिक न हो पाये 'प्रसून' क्षण अभिशापित,
रहे भक्ति में लीन सभी की ज़िंदगी।

75

आँख में आँसू भी आयें तो भला पोछेगा कौन?
दर्द सीने में उठे तो दर्द को देखेगा कौन?

किन परिस्थितियों-तनावों-त्रासदी में जी रहे,
कौन है अपना सगा इस बात को सोचेगा कौन?

जो फसल बोई कभी थी जल बिना जो सूखती,
है किसे फुरसत भला इस खेत को सींचेगा कौन?

हम तो अपने आप में खोये हुए डूबे हुए,
जो लकीरें खींच दी आगे भला खींचेगा कौन?

अब तो कोई भी नहीं ऐसा कि रूठे तो मना लें,
रूठने पर हम मना ले हमसे अब रूठेगा कौन?

जो धनुष काँधे धरे थे अब न वो ढो पा रहे,
अब किसे बोलो निहारें तीर ये छोड़ेगा कौन?

जो अनागत भावधारा मन में धारे हो 'प्रसून',
उसको अपने लक्ष्य पथ पर व्यक्ति अब मोड़ेगा कौन?

76

काट करके गई रास्ता आँधियाँ हमने सोचा न था।
सब निपट ही गया शांति से इसका पौधा तो रोपा न था।

पहले भी सिंधु-मंथन हुआ आत्म-मंथन भी करना जरा,
बस मिलेगा अनिश्चय भला कल ये हमको भरोसा न था।

दर्द की भूमि पर प्यार के बीज डाले गये हैं मगर,
आँसुओं की उगी है फसल हमको इसका अंदेशा न था।

रंजिशों में सुलगता शहर अपनेपन को तरसने लगा,
नफरतों की खुली संस्था प्यार का तो मदरसा न था।

धीरे-धीरे सुबह आयेगी सूर्य नभ में निकल आयेगा,
पर हृदय में रहेगी वही रात्रि गहरी ये समझा न था।

कौन समझे मनोकामना कौन सुनता हृदय-याचना,
पास अपने प्रमाणित कोई एक पद या कि तमगा न था।

घोंपकर पीठ पर वो गया एक नुकीला सा खंजर 'प्रसून',
शाम का वक़्त बेशक ही था ज्यादा गहरा धुँधलका न था।

77

बिगड़े हुए सपूत को लायक बना दिया।
हमको कोरोना काल ने नायक बना दिया।

हम काम आये दूसरों के बात है बड़ी,
हमको सगर्व शांति प्रदायक बना दिया।

करते नहीं थे हम कभी भी काम कोई भी,
अपने ही घर का हमको सहायक बना दिया।

दुश्मन जो हम सभी का कोरोना बना हुआ,
कर देगा शत्रु नाश वो शायक बना दिया।

हमने तो गुनगुनाया या गाया कभी न था,
मस्ती में झूमता हुआ गायक बना दिया।

आया है सेवाभाव हममें पूर्व से अधिक,
सोचा नहीं था मन से विधायक बना दिया।

सबका ही भला कर सकें ये भावना बनी,
हमको भी प्रभु ने ऐसा विनायक बना दिया।

78

चमका दे भाग्य को वो सितारा नहीं बना।
जीवन में भर दे ताजगी कारा नहीं बना।

बस इंकलाब जिंदाबाद ही अमर हुआ,
तोड़े जो सियासत को वो नारा नहीं बना।

कुछ कर विधाता इनमें थोड़ी सी शकर मिला,
निकले जो आँसू आँख से खारा नहीं बना।

अनुभूतियों ने हमको निखारा ये सच तो है,
मन स्वाभिमान झूठ के द्वारा नहीं बना।

इंसान ही बना रहे इंसान ठीक है,
इसको समय के हाथ का चारा नहीं बना।

ऐसा न हो कभी कि हम इंसानियत तजें,
बह जायें जिसमें हमको वो धारा नहीं बना।

सच्चाई की राहों में पग धरो सदा 'प्रसून',
ईमान तोड़ दे जो वो गारा नहीं बना।

79

जीवन वरदान मानिये।
मन को भगवान मानिये।

दूजे के हित में जो लगे,
उसको इंसान मानिये।

जो प्रबुद्ध वर्ग से मिले,
उत्तम सम्मान मानिये।

सीधे जो लक्ष्य भेद दे,
सक्षम संधान मानिये।

जो हो निष्काम भाव से,
उसको ही दान मानिये।

जो विरुद्ध हो समाज के,
दानव शैतान मानिये।

मेहनत से प्राप्त जो 'प्रसून',
सच्ची पहचान मानिये।

80

दर्द के सरोवरों का नीर पी गये।
तीन लोक की अनाम पीर पी गये।

हम कबीर बन के चलती चाकी देख के,
रो पड़े अधीरता कबीर पी गये।

छोटी रेखा हो बड़ी इसी प्रयास में,
सारा श्रम लकीर के फकीर पी गये।

था घमंड निज विराटता पे सिंधु को,
एक साँस में अगस्त्य वीर पी गये।

कर्मनाशिनी नदी को लोग कह रहे,
जिसका सारा जल उसी के तीर पी गये।

युगों युगों की प्यास होंठ पर लिखी मिली,
बुझ सकी तृषा नहीं समीर पी गये।

अपने लोग अपने बन रहे 'प्रसून' जो,
देह का लहू वो वक्ष चीर पी गये।

81

इसे हाथ लेकर है बिगड़ा जमाना।
नशे की ये बोतल बड़ी कातिलाना।

इसे पीना है पाँच सौ खर्च कर दें,
भले घर में राशन न बच्चों का खाना।

नशेबाजी करके गलत गम न होगा,
इसे पीने को सौ बहाने बनाना।

वो अर्धांगिनी घर की दासी नहीं है,
मगर सच है दासत्व उसको निभाना।

वो भोला सा मासूम बालक भी सोचे,
ये कैसा पिता है न जिसका ठिकाना।

नशेबाजी तो नीति बाधक नहीं है,
नशा करके सोचें नई क्रांति लाना।

कोरोना से घातक है उस पर भी भारी,
खुली छूट है मुँह से इसको लगाना।

भले दुधमुँहे के न मुँह दुग्ध बोतल,
मगर हमको तो स्वर्ग साम्राज्य पाना।

खुशी हो तो पीना दुखी हो तो पीना,
चलन बन गया है ये पीना पिलाना।

82

कितने रात्रि दिवस खोये हैं।
चाहों के तरकश खोये हैं।

नागफनी के वृक्ष कटीले,
साँसों में बरबस खोये हैं।

जीवन के इस बियाबान में,
मानस के मधु रस खोये हैं।

किंचित भी अनुमान नहीं था,
सपने कहीं विवश खोये हैं।

अभी अभी तो भाग रहे थे,
कई तो खाकर गश खोये हैं।

प्राप्त न कुछ भी कर पाये हैं,
सरसठ मधुर बरस खोये हैं।

शब्दों में जीवन बसता है,
शत शत शब्द सरस खोये हैं।

83

सरहदों पर युद्ध के आसार दिखते हैं।
शत्रुओं के वेष में बटमार दिखते हैं।

देखना इनको न जलते नेत्रों से तुम,
ढेर में बारूद के अंगार दिखते हैं।

हम परोसेंगे समाचारों को अब कैसे?
पूरी तैयारी किये अखबार दिखते हैं।

आम जन की चेतना शापित हुई फिर से,
हौसले उनके बड़े लाचार दिखते हैं।

बौखलाहट उसकी ले डूबी उसी को है,
उसके सपने इस कदर बीमार दिखते हैं।

हो अधम से भी अधम जो भावना मन की,
उससे भी ज्यादा अधम व्यभिचार दिखते हैं।

वो सुखों से ऊब कर चिंतन करे दुख का,
उसको जीवन के सुखद पल भार दिखते हैं।

84

जिंदगानी का सार सारा है।
रूप जो साधुओं सा धारा है।

तुम जिसे शून्य मात्र समझे हो,
हमने तो दृष्टि में उतारा है।

तुम जो धूनी रमाये बैठे हो,
मन में सागर सा नीर खारा है।

मन मलिन ही रहा न साफ किया,
आत्म आँगन कहाँ बुहारा है।

पीर की एक वीथिका में हो,
राजपथ पर न पाँव धारा है।

तुम स्वयं को सहारा दे न सके,
तुम किसी का नहीं सहारा हो।

चंद्रमा तो 'प्रसून' हो न सका,
एक धूमिल पड़ा सितारा है।

85

जैसे धरती पे नभ के सितारे चले।
हम सड़क पर सदा एक किनारे चले।

कुछ डरे और सहमे दिखे और कुछ,
लोग हाथों में लेकर कटारे चले।

फूल को प्यार की चाशनी में डुबो,
हम विगत के दुखद पल बिसारे चले।

क्रूरतम इस दनुजता के माहौल में,
कोख इंसानियत की सँवारे चले।

होंठ पर कम पड़े मौन भी हो गये,
लाद कर हम तो काँधों पे नारे चले।

जिस गली में कई लाशों के ढेर थे,
उस गली हम नसीबों के मारे चले।

पतझरों से भरे मधुवनों में 'प्रसून',
लोग ऐसे भी ढोकर बहारे चले।

86

जब भी जल प्रलय होगी सोचो क्या गजब होगा।
जल ही जल जो देखेंगे दृश्य वो अजब होगा।

यश की पुस्तिकाओं में नाम होगा अपना भी,
हम बड़े परेशान हैं ऐसा जाने कब होगा।

हम तो तैयार खड़े बिना सोचे समझे ही,
देखा नहीं जो अब तक देखना वो सब होगा।

सामने जो होता रहा सबने वो देखा है,
वो भी देखेंगे खुलकर सामने जो अब होगा।

युग तो कालचक्रों में फँसा पड़ा है देखो,
जब से व्यूह टूटेंगे फैसला तो तब होगा।

हम भला यूँ डर डर के क्यों जियें जमाने में,
काल को भी देखेंगे सामने वो जब होगा।

जो भी होगा शुभ होगा सत्य शिव सुंदर भी,
हम 'प्रसून' सोचते रहे आगे क्या क्या रब होगा।

87

आँधियाँ तुमने उड़ाईं कर रहा मंथन जगत।
अब अनागत क्या करे जब हो गया सब क्षत विक्षत।

दर्द का साम्राज्य फैला बस्तियों गाँवों नगर तक,
और कोई चौधरी बन डालकर बैठा तखत।

हर ह्रदय में भय भरा बैठा हुआ है देखिये,
जाने कब क्या जाये घट संभावना यह हर बखत।

जब कभी ऊँचाइयों से भूमि पर गिर जायें तो,
ऐसा लगता व्योम से टूटा कोई ताजा नखत।

यह भी ईश्वर की कृपा है या किसी की दी दुआ,
हो न पाया है किसी के सामने यह शीश नत।

हम पुरानी गलतियाँ दुहरायें मत यह ध्यान दें,
सीख हमको दे रहा आशीष देकर के विगत।

पड़ गयी उस पर न जाने दृष्टि किसकी है 'प्रसून',
देखते ही देखते जूठा हुआ यौवन अक्षत।

४४

बीते जीवन की सब बातें भूल गये।
कितनी अग्नि भरी बरसातें भूल गये।

खेत बाग मेंड़ें पगडंडी याद नहीं,
नदी ताल बगुलों की पाँतें भूल गये।

भूल गये संकेत नयन से नयनों के,
तपन भरी सावन की रातें भूल गये।

पड़कर नई सभ्यता वाले व्यूहों में,
भइया मुनुवा वाले नाते भूल गये।

अब न कहीं पर अपनेपन की बात दिखे,
प्यार भरी सारी सौगातें भूल गये।

अलख जगा जाती थीं पल पल जीने की,
अपनों की वे मीठी घातें भूल गये।

भाईचारा और बढ़ा जातीं 'प्रसून' जो,
खेल खेल की वे शह मातें भूल गये।

89

हर दिन कोई हवा विरोधी नश्तर क्षण क्षण दे।
टीस हृदय को नई नवेली जग का कण कण दे।

वृद्ध पिता क्या करे भला जब स्थिति ऐसी हो,
जब उसका ही पुत्र युद्ध का खुला निमंत्रण दे।

फिर भी कोई ऐसा भी है जो कि जिंदगी को,
रसमय करने को आतुर होकर मधु वर्षण दे।

उस मृतात्मा का क्या होगा जीवित ही जिसको,
हो जाये तन दग्ध अग्नि में कोई न तर्पण दे।

ऐसा कोई मिला न अब तक जो प्यासे मन को,
एक घूँट अमृत का देकर सुख के दो क्षण दे।

जो भी आया निकट हमारे अपनाया उसको भी,
लेकिन जाते जाते वह कोई न कोई व्रण दे।

हम 'प्रसून' अभ्यस्त हो गये धोखे खाने के,
कोई नये कलेवर में आ दिखला दर्पण दे।

90

मेरी अपनी प्यास तनिक सी मेरी अपनी भूख बहुत कम।
मेरे जीवन में लहराया सदा सादगी का ही परचम।

मेरा स्वाभिमान अपना है लक्ष्य गुम हुआ सा सपना है,
मेरा अहम चूर होकर भी सूनेपन में छेड़े सरगम।

अलख जगाता रहा सदा ही दीनों दुखियों बीच सदा,
वहीं जलाया दीप जहाँ पर दिखा मुझे बस तम ही तम।

बस्ती बस्ती खाक छान के अनजानों को स्वजन मान के,
बेहद कठिन परिस्थितियों में भी रक्खा है मन पर संयम।

दोधारी सी तलवारों पर रखकर पाँव चले आये हैं,
किंतु किसी की पीड़ा देखी तभी हुई ये आँखें हैं नम।

अलग दृष्टि थी अलग सृष्टि थी और अलग थीं अपनी राहें,
बात जहाँ पर मै की आई आगे बस हो जाते हम।

हम 'प्रसून' होकर भी औरों के ही लिये महकते आये,
समय समय पर किंतु दिखाया हमने भी अपना है दमखम।

91

मंजिलों की दूरियों को आँख में भर लें।
इस धरा से व्योम तक का मार्ग तय कर लें।

हम इरादों के सहारे शून्य छू लेंगे,
बस करें इतना विहंगों के नये पर लें।

भालों जैसे लोग भोले व्यक्ति को छलते,
हम चलो ऐसे किसी के दुःख को हर लें।

सांत्वना की सीढ़ियाँ चढ़ते रहे पर क्या मिला,
कुछ असर होगा नहीं हम नित्य ही मर लें।

पर्वतों की चोटियों पर पाँव धरना लक्ष्य है,
किंतु इसके पूर्व धरती पर चरण धर लें।

है अभी विश्वास हैं हम कल्पतरु के पास ही,
क्यों न हम भी कल्पतरु की शाख सा झर लें।

कोई तो संबल बनेगा आज बेशक ही 'प्रसून',
आने वाले कल की खातिर सांत्वना स्वर लें।

92

इसे तुम सच ही मानो समय से परे हुए हैं।
तभी हम डरे हुए हैं कण्ठ तक भरे हुए हैं।

सुदृढ़ आश्वासन दे दो तो नवजीवन हम पायें,
हमारी साँसें अटकी देह तरु झरे हुए हैं।

हमें है बड़ी जरूरत तुम्हारे अपनेपन की,
झलक भर दे दो आकर जख़्म सब हरे हुए हैं।

कभी जाग्रत सारे थे आज ये बिना सहारे,
प्राण इनमें तुम भर दो स्वप्न सब मरे हुए हैं।

दो मीठे बोल बोल दे न कोई भी ऐसा है,
सभी जो थे अपने दूरियाँ करे हुए हैं।

आजकल दिन हैं ऐसे करें मनमानी जैसे,
हो गईं पागल ग़ज़लें गीत बावरे हुए हैं।

'प्रसून' है विकट परिस्थिति प्रीति के बिना जी रहे,
आज भी सत्य तुम्हारे मीत आसरे हुए हैं।

93

मन बहुत यार पर न जाना है।
झूठे मनुहार पर न जाना है।

आप कितने मुखर भले ही हो,
मौन स्वीकार पर न जाना है।

जीतना ही नियति रही अपनी,
हो भले हार पर न जाना है।

अपनी हर साँस प्यार की भूखी,
अर्थ व्यापार पर न जाना है।

आपने जो किया उचित होगा,
आत्मिक वार पर न जाना है।

खूबसूरत है ज़िंदगी उसके,
शब्द सुकुमार पर न जाना है।

अनुभवों की नदी में तैरे हैं,
मौसमी धार पर न जाना है।

दिखते मासूम हो प्रसूनों से,
छल कपट प्यार पर न जाना है।

खोट दिखती 'प्रसून' नीयत में,
आपके द्वार पर न जाना है।

94

उदास आँखों के सपनों को पाल कर रखना।
हो सके तो इन्हें देख भाल कर रखना।

तुम्हें पता है कई लोग इनके पीछे हैं,
बहुत जरूरी है इनसे सँभाल कर रखना।

यही तुम्हारे लिये शेष कल की आशा हैं,
शब्द बहुमूल्य हैं इनको मशाल कर रखना।

बिछीं है चाँदनी की धूल की कई परतें,
तुम्हारे सामने रेशम से चाल कर रखना।

नई जो पीढ़ियाँ उनसे मिलेगा हल भी सही,
सामने उनके ये सारे सवाल कर रखना।

करेंगे आत्मा छलनी वो पल भी आयेंगे,
ठोकरों पर उन्हें तुम भी उछाल कर रखना।

फकीर बन के वो परमात्मा भी आ सकता,
जाने क्या माँग ले मन को विशाल कर रखना।

95

बहती हुई नदी का कोई विकल्प सोचो।
आहत हुई सदी का कोई विकल्प सोचो।

संभव नहीं है सीने को चीर कर दिखाना,
तुलसी की चौपदी का कोई विकल्प सोचो।

जिसमें सलिल नहीं बस बहती हो अग्निधारा,
ऐसी महानदी का कोई विकल्प सोचो।

आना न कृष्ण को है काली बने कि दुर्गा,
इस युग की द्रौपदी का कोई विकल्प सोचो।

अच्छा करो गलत हो जो गलत करो तो अच्छा,
नेकी का और बदी का कोई विकल्प सोचो।

जिसमें महज मनुज का धड़ शेष सिर नहीं है,
ऐसी महासदी का कोई विकल्प सोचो।

दम तोड़ने को साँसें कब से तरस रही हैं,
जन मन की त्रासदी का कोई विकल्प सोचो।

96

मन है कि जैसे तेरी ही ओर उड़ा जाता।
अपने करों में इसकी ले डोर उड़ा जाता।

तुमने हमारी नींदें ऐसे चुराई सच है,
धनराशि किसी घर की ज्यों चोर उड़ा जाता।

तेरे रूप का नशा ज्यों नस नस में भर गया है।
हर चाह कहीं इच्छा का मोर उड़ा जाता।

तुझे सोचना नियति है ऐसे क्षणों को जैसे,
ब्रह्माण्ड से जो उठता वो शोर उड़ा जाता।

तू सामने से गुजरे ऐसा प्रतीत होता,
बादल गगन में जैसे घनघोर उड़ा जाता।

तेरा रूप मेरे मन को मस्तिष्क को भ्रमित कर,
इस छोर से ज्यों लेकर उस छोर उड़ा जाता।

मनमोहिनी तेरी छवि करके अधैर्य मुझको,
मेरा धैर्य मेरी साँसें झकझोर उड़ा जाता।

मेरा चैन शांति सुख सब तेरी याद का झकोरा,
हर शाम उड़ा जाता हर भोर उड़ा जाता।

97

कलाकार तुम बड़े तुम्हारी जय जय जय।
तुम सबके पग पड़े तुम्हारी जय जय जय।

दिन को रात रात को दिन कह देते हो,
नियम बेतुके कड़े तुम्हारी जय जय जय।

काम शेष बस यही उखाड़ो प्रतिदिन ही,
सारे मुर्दे गड़े तुम्हारी जय जय जय।

बात न सुनते भले विषय कोई भी हो,
अपनी जिद पर अड़े तुम्हारी जय जय जय।

बातें कर अटपटी झिड़कियाँ मिलें लटी,
मुँह पर ताले जड़े तुम्हारी जय जय जय।

जब कुछ करते गलत पता चल जाता है,
तुमको दुनिया तड़े तुम्हारी जय जय जय।

बड़े अहिंसावादी ज्ञान प्रदाता हो,
सदा सभी से लड़े तुम्हारी जय जय जय।

98

भोर की पहली किरन छूकर गई।
आँख में कुछ दृश्य अनुपम भर गई।

झील के ऊपर उड़ी चिड़िया अभी,
नीर में धोती हुई जो पर गई।

वह मिली चैतन्यता खुश आत्मा,
रात्रि की पनपी हताशा भर गई।

देह में दौड़ी अचानक चेतना,
चाह मन की प्राण की हर तर गई।

नृत्यरत हो सृष्टि की काया नई,
प्रीति के लिख ढाई वो आखर गई।

हम परिधियों में समय के बँध गये,
व्योम तक अपने गुंजाती स्वर गई।

99

धरा के देवता गोलू गगन के चन्द्रमा गोलू।
हमें भी न्याय देना प्रभु करें हम प्रार्थना गोलू।

सुनायें दीन जन गाथा झुकाते हैं तुम्हें माथा,
तुम्हीं अब दूर क देना हमारी दीनता गोलू।

तुम्हीं संबल हमारा हो पराजित का सहारा हो,
तुम्हारी जय करे दुनिया अधर की वन्दना गोलू।

करो प्रभु दूर अँधियारा बिखेरो रश्मि उजियारा,
शरण आये तुम्हारी हम करें अब याचना गोलू।

तुम्हीं अवतार शिव जी का तुम्हारे बिन लगे फीका,
ये जीवन का जो मधुवन है हमें दो सांत्वना गोलू।

'प्रसून' अब होके नतमस्तक तुम्हारे द्वार दे दस्तक,
तुम्हें साकार करनी है अजय की कल्पना गोलू।

100

मेरी आँखों में तेरे सपने हैं।
तेरी आँखों में मेरे सपने हैं।

जन्म लेते नयन की झीलों में,
तोड़ते दम सबेरे सपने हैं।

उनके ही बस की बात लगती है,
करते दुनिया के फेरे सपने हैं।

सत्य हो जाते हैं सभी कहते,
आते जो मुँह अँधेरे सपने हैं।

मन को मस्तिष्क और काया को,
हर तरफ से ये घेरे सपने हैं।

बूँदें बनकर बरस बरस जाते,
बादलों से घनेरे सपने हैं।

मुट्ठी भर भर 'प्रसून' हमने भी,
चाँदनी से बिखेरे सपने हैं।

101

धरती पर सैलाब नाचते ऐसे दृश्य दिखे।
मौलिकता के आब नाचते ऐसे दृश्य दिखे।

एक दूसरे से मिल-जुल कर खुश हो जाते।
इधर उधर तालाब नाचते ऐसे दृश्य दिखे।

तुम गीतों के उठे बवण्डर भर हाथों,
बगलों में भर दाब नाचते ऐदे दृश्य दिखे।

धरा गगन संग सागर पर्वत रेती भी,
ताली दे आफताब नाचते ऐसे दृश्य दिखे।

तुम्हें तो चिंता सता रही सृष्टि के वैभव की,
मुट्ठी भर भर ख्वाब नाचते ऐसे दृश्य दिखे।

ये सारा ही कवि समाज उन्मुक्त हुआ,
लोटे भर भर राब नाचते ऐसे दृश्य दिखे।

साथ बेअदब, रामराज, पाण्डेय प्रवीण,
मनमोहन, बेताब नाचते ऐसे दृश्य दिखे।

गंगा यमुना शिप्रा झेलम सरयू संग,
वह दरियाये चनाव नाचते ऐसे दृश्य दिखे।

102

करके बड़े बवाल नाचता।
गले डाल कर व्याल नाचता।

धुंध ओढ़ कर काल नाचता,
नयनों भर भूचाल नाचता।

रुण्ड अलग हैं मुण्ड अलग हैं,
तलवारें ले ढाल नाचता।

सर पर ले तिरपाल नाचता,
मस्ती भर ले चाल नाचता।

यही गगन जो सतरंगी क्यों,
पा ले नये बवाल नाचता।

शमशानों में जगर मगर कर,
थपकी दे बेताल नाचता।

कैसा कठिन समय ऐसे में,
भारत माँ का लाल नाचता।

103

गीतकार तुम प्रखर ये सारा जग जाने।
दृष्टि तुम्हारी सगर ये सारा जग जाने।

कर देते हो स्वतः लेखनी ले हाथों,
धरा जगर और मगर ये सारा जग जाने।

रहते हो भयभीत सभी कुछ ज्ञात हमें,
कभी न कहते मगर ये सारा जग जाने।

डूब-डूब कर कई बार उतराये हो,
फँसकर गहरी भँवर ये सारा जग जाने।

कभी किसी ने ऊँचे स्वर में बोल दिया,
डर जाते तुम अमर ये सारा जग जाने।

चुटकी भर जो प्रसन्नता मिल जाती है,
तुम जाते हो सँवर ये सारा जग जाने।

तुम 'प्रसून' तो हो लेकिन मुरझाये हुए,
कर दीपित हर डगर ये सारा जग जाने।

104

गुमसुम गुमसुम हुए भला क्यों प्रभु जाने।
महुआ जैसे चुए भला क्यों प्रभु जाने।

चारों तरफ तुम्हारी चर्चा होती है,
घिरे चौमुखे धुँए भला क्यों प्रभु जाने।

तुमने तो प्रतिबंध न माना दुनिया का,
आज बन गये सुए भला क्यों प्रभु जाने।

पूर्व दिशा में सूर्य बने तुम उगे सदा,
अब क्यों मैले हुए भला क्यों प्रभु जाने।

भाग रहे थे काँधों पर धर पुण्य सभी,
बैलों वाले जुँए भला क्यों प्रभु जाने।

अब तक तो तुम मान सरोवर जैसे थे,
अब सूखे से कुँए भला क्यों प्रभु जाने।

तुम 'प्रसून' थे तुमको जग महकाना था,
अब हो मूरख मुए भला क्यों प्रभु जाने।

105

एक शव बन के रह जायेंगे।
कुछ न घर वाले कर पायेंगे।

आत्मा व्योम को छू ही लेगी,
देख कर मन को दहलायेंगे।

माला साँसों की टूटेगी तय,
एक दिन मुँह की सब खायेंगे।

लोग बिलखेंगे बिलखायेंगे,
और आँसू भी बरसायेंगे।

सेज अंतिम चिता की मिलेगी,
राख का ढेर हो जायेंगे।

शेष पल जो बचे उनको जी,
बस वही काम भी आयेंगे।

106

बड़ी जर्जर पुरानी है नाव क्या करें।
उसपे नदिया का तेज है बहाव क्या करें।

प्राण आ जाते हैं कण्ठ तक भास हो,
जलता साँसों का पल पल अलाव क्या करें।

मुक्ति कैसे मिले शांति कैसे मिले,
किससे इसका करें मोलभाव क्या करें।

नीर भरने लगा डगमगाने लगी,
टूटी पतवार जल का भराव क्या करें।

डूब जाये न गहरे भँवर में कहीं,
साधनों का हुआ है अभाव क्या करें।

107

हमारी भावनाओं पर न कर तू वार बंजारे।
बही जिसमें सदा ही जान्हवी की धार बंजारे।

कटारे हाथ में लेकर न तू संहार कर इनका,
अगर तू दे सके तो दे तनिक सा प्यार बंजारे।

कभी कोशिश तो कर इनके तले महके सुमन भी हों,
हैं तेरे पग तले दहके हुए अंगार बंजारे।

अगर तू दूसरों के वास्ते गाये मधुर नगमे,
तो लोहा मान ले तेरा सकल संसार बंजारे।

किसी की पीर को अपना समझ तो हो नया जादू,
तभी जानेगा तू इस जिंदगी का सार बंजारे।

बड़ी गहरी भँवर उस पर मगर रख सावधानी भी,
तभी तू इस नदी को कर सकेगा पार बंजारे।

विगत भी आज भी बेशक है तेरा ही अनागत भी,
इसे जीना तुझे है स्वयं के अनुसार बंजारे।

सदा सोचा स्वयं का हित न औरों का कभी सोचा,
इसी कारण नहीं तेरा कोई आधार बंजारे।

किसी की आँख के आँसू भी पोंछो और पी लो भी,
'प्रसून' ऐसे भी हो सकता तेरा उद्धार बंजारे।

108

लेखनी धारदार करते चलो।
मन भी थोड़ा उदार करते चलो।

तंग गलियाँ हैं तंग मानस हैं,
बस्तियों में सुधार करते चलो।

अब नया दौर है जमाना है,
रूढ़ियों पर प्रहार करते चलो।

देखे आश्चर्य से ये दुनिया भी,
काम वो शानदार करते चलो।

आग भीतर है आग बाहर है,
मन को भी खुशगवार करते चलो।

आत्मा बेच कर नहीं जीना,
इसमें बेशक निखार करते चलो।

ये धरा रहने के नहीं काबिल,
हो सके तो प्रचार करते चलो।

109

हमारी त्रासदी है मन कभी जीता न हारा है।
लड़े हैं युद्ध अपने से रुकी जीवन की धारा है।

हमारे हाथ में होता तो इसको रोक ही लेते,
समय रुकता न रोके से दुखी हर दिन गुजारा है।

नहीं सीमायें जीवन की जिन्हें हम खोज ही लेते,
हमें हर मोड़ पर जाकर इसी ने ही तो मारा है।

कोई आशा नहीं पलती कोई शाखा नहीं फलती,
निराशा ही निराशा है मिला हर सिंधु खारा है।

हुई हर साँस घायल सी हुई हर प्यास पागल सी,
भले हमने धरा पर नित्य अंबर को उतारा है।

मलिन होता गया मानस बढ़ी नस नस में व्याकुलता,
अपावन तन हुआ बेशक यही तो खेल सारा है।

'प्रसून' अब तो अनागत काल की ही बस प्रतीक्षा है,
मिली है यंत्रणाओं की बड़ी अभिशप्त कारा है।

110

बड़ा ज्वरग्रस्त पीड़ित सा अनागत काल दिखता है।
जो आता है दुखी करता यही हर साल दिखता है।

किसी की सोच में अमृत किसी की सोच में विष है,
जो मिलता है सुरक्षा में लिये एक ढाल दिखता है।

मगर हिंसक अहिंसक मीन जिसके मूल वासी हैं,
बड़ा गहरा हमें मन का अनैतिक ताल दिखता है।

जहाँ भी पाँव धरते हम वो धरती का अलग टुकड़ा,
जो देखो ध्यान से तो वो लहू से लाल दिखता है।

न मौलिक रूप मानव का भरी सबमें ही कृत्रिमता,
जिसे देखो वही ओढ़े कोई पशु खाल दिखता है।

कहीं स्पष्ट चिंतन आचरण की छवि नहीं दिखती,
मनोमस्तिष्क पर सबके भ्रमों का जाल दिखता है।

'प्रसून' इस जिंदगी में जो मिला ज्वालामुखी पीते,
अभावों से भरा जीवन समय बेहाल दिखता है।

111

मेरा चिंतन महाचिंतन अमर फल देने वाला है।
अकिंचन याचनाओं को न हमने मन में पाला है।

अनागत एक आशा है न शकुनि का ये पांसा है,
सुखद जीवन सभी जी लें ये वरदानी दुशाला है।

न संबंधों की सीमा है उभरता शोर धीमा है,
सभी जैसे सपन लगते चुभा सीने में भाला है।

अनेकों रत्न पाये हैं मनोमस्तिष्क को मथ के,
इन्हें उनके समुद्रों की परिधियों से निकाला है।

समय मनमानियाँ करता मनुज मजबूर सहने को,
सभी तत्पर इसे पी लें परिस्थितिजन्य हाला है।

अपरिचित हैं सभी परिचित दरारें ढेर सारी हैं,
कई टूटे कई बिखरे सभी को देखा-भाला है।

'प्रसून' अपना यही तो ध्येय है पाथेय जीने का,
थके हारे दिखे जो भी उन्हें बढ़कर सम्हाला है।

वरेण्य साहित्यकार डॉ. अजय प्रसून

18 जनवरी सन् 1954 को जन्मे डॉ. अजय कुमार द्विवेदी जो साहित्यिक जगत में डॉ. अजय प्रसून के नाम से विख्यात हैं, दो शताब्दियों के मेल के रूप में हमारे सामने आते हैं। उनमें तत्कालीन समय की परम्परागत विशेषतायें और आज के सोशल मीडिया के युग के सारे गुण भी समाये हुए हैं। साहित्य जगत में वे किसी परिचय के मोहताज नहीं है। वे स्वयं तो रचनाधर्मिता का पालन करते ही हैं किन्तु अपनी संस्था "अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान" के माध्यम से कई दशकों से प्रत्येक मासिक गोष्ठी में दो साहित्यकारों क्रमशः एक पुरुष साहित्यकार को अनागत मार्तण्ड सम्मान और एक महिला साहित्यकार को अनागत चन्द्रिका सम्मान से निःशुल्क सम्मानित भी करते हैं।

प्रसून जी "अनागत कविता आंदोलन के प्रस्तावक" के रूप में हिन्दी जगत में पदार्पण करते हैं और कठिन वर्तमान जीते हुए स्वर्णिम भविष्य की कल्पना को साकार करने का मंत्र देते हैं। सच तो यह है कि हर कोई, हमारा अनागत कैसा होगा इसी सोच में जीता है और इसे अपने मनोनुकूल बनाने का भरसक प्रयास करता है। साहित्य भी अनागत से वंचित नहीं है परंतु अनागत साहित्य का नाम डॉ अजय प्रसून जी ने ही दिया जो हिन्दी साहित्य जगत की एक उपलब्धि है और सदा रहेगी।

प्रसून जी की कई काव्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें 'हो जाये मन बुद्ध', 'प्रश्न अनशन किए जो बैठे हैं' और 'तितली के पंखों सी भोर' प्रमुख हैं। इसके अलावा 14 काव्य कृतियाँ पूर्व प्रकाशित हैं जिसमें गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, छन्द, कविता संग्रह, बालगीत, हनुमान जी के प्रति समर्पित भाव से अस्सीसा और शनिदेव के प्रति व्यक्त किया गया भाव शनि अस्सीसा के रूप में साहित्य जगत के समक्ष है। आपके साहित्यिक अवदान हेतु "राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उत्तर प्रदेश" द्वारा एक लाख रुपये तथा बाल साहित्य पर उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा आपको पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जा चुका है। जाने कितने सम्मान आपको विभिन्न संस्थाओं से मिल चुके हैं जिनकी गणना करना कठिन है।

प्रसून जी एक अच्छे गायक और काव्य प्रस्तोता हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन से भी आपकी कई कवितायें प्रसारित हो चुकी हैं। 71 वर्षीय प्रसून जी में जो तेज और साहित्यिक ऊर्जा मुझे देखने को मिलती है, अन्यत्र दुर्लभ है। प्रसून जी अस्वस्थता की स्थिति में भी साहित्यिक कार्य से विरत नहीं रहे हैं। जब कभी उनसे मिलता हूँ मेरे अन्दर एक नया संचार हो जाता है जो कुछ न कुछ साहित्यिक कार्य करने की प्रेरणा देता है। ईश्वर उन्हें स्वस्थ रखे ताकि हिन्दी साहित्य जगत को और अपने मित्रों को प्रसून जी बहुत कुछ दे सकें। इस संसार में वही महान है जिसने संसार को कुछ दिया। इसी भावना के साथ प्रसून जी के प्रति हार्दिक शुभकामना व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह उन्हें स्वस्थ रखे ताकि साहित्य जगत उनसे लाभान्वित होता रहे और अनागत साहित्य का प्रचार-प्रसार होता रहे।

राम दुलारे सिंह सुजान, पूर्व प्राचार्य,
संप्रति अध्यक्षः सुजान साहित्य एवं समाज कल्याण समिति
जरई कलाँ, सुलतानपुर, उ.प्र.-227818
मो.: 8009016636

आकल्प प्रकाशन
Aakalp Prakashan
615/128, Preeti Nagar, Sitapur Road,
Lucknow-226021 Mob.: 9839746476
E-mail: aakalpprakashan@gmail.com

ISBN : 978-81-981298-0-2
9 788198 129802
₹ 200.00